वर्षः 48 अंकः 5-6 13.12.2025 (सितंबर-दिसंबर)

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

परम पूज्य गुरुजी के स्वास्थ्य हेतु गुणातीत स्वरूपों, वरिष्ठ संतों-मुक्तों के आगमन ने एहसास कराया कि गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी द्वारा प्रदत्त 'योगी परिवार' दिव्य प्रेम के अटूट धागों से बुना हुआ है...

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

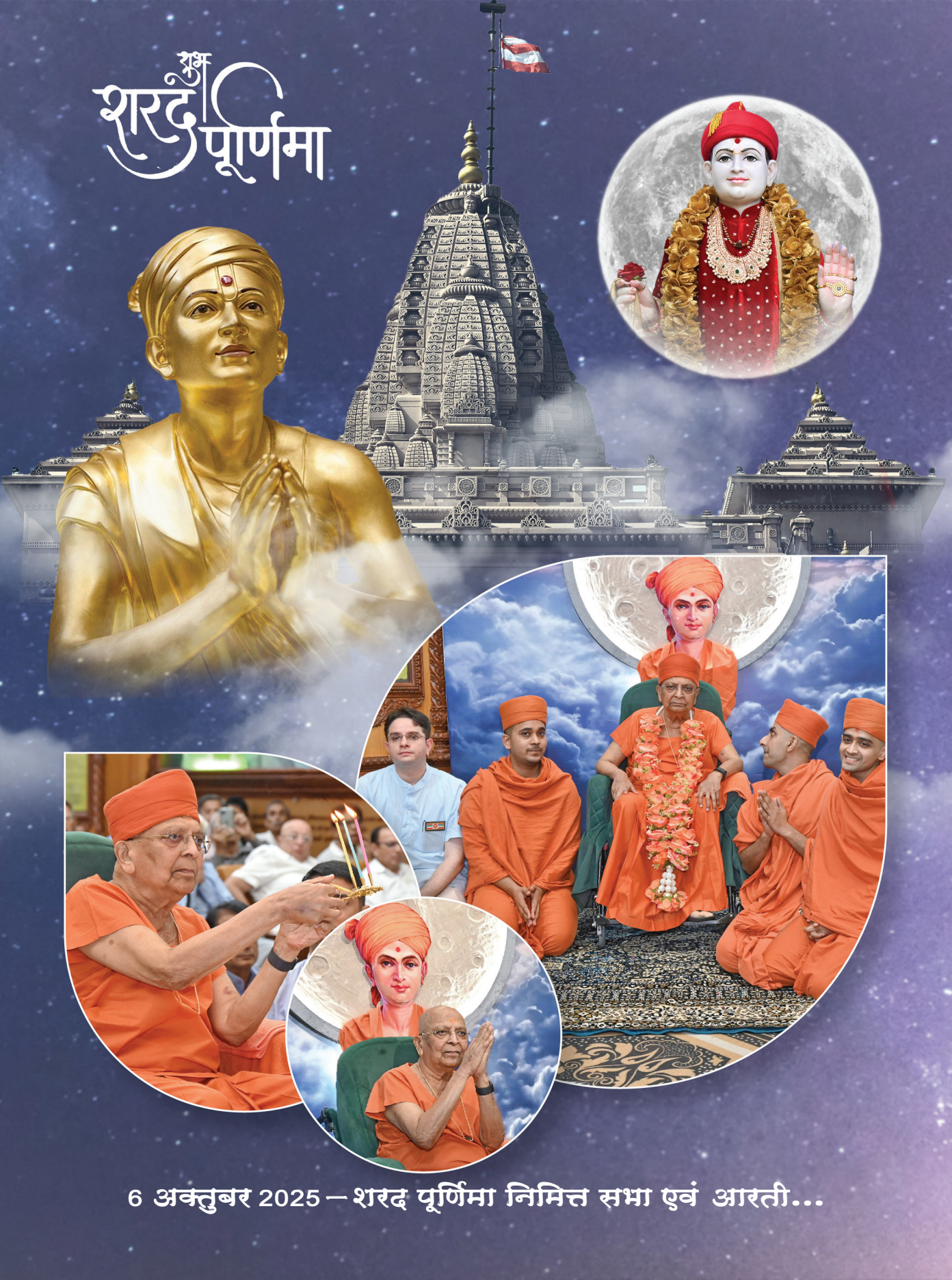

6 अक्तुबर 2025 – शरद पूर्णिमा निमित्त सभा एवं आरती...

18 अक्तुबर 2025 – धनत्रयोदशी निमित्त महापूजा...

शुभ दीपावली

20 अक्तुबर 2025

प्रकाश के त्यौहार पर शारदा पूजन...

एक दूसरे का सहर्ष स्वीकार करके सुहृदभाव के दीप प्रगटायें...

शुभ दीपावली

अन्नकूट उत्सव

22 अक्तुबर 2025—वार्षिक स्नेहमिलन सभा...

मेरे केंद्र बिंदु गुरुजी हैं और रहेंगे। हम सब गुरुजी से एक साथ जुड़े हुए हैं
इसलिए आज मुझे और मेरे परिवार को हर प्रकार से कामयाबी मिली है...

– पू. चिंतन अग्रवाल

गुरुजी को दिल्ली में हम सबके बीच रहते हुए 58 साल हो गए
उनके परिश्रम व तपस्या का ही फल है कि हम सब आज यहाँ बैठे हैं।
हमारे हृदयाकाश में काकाजी-गुरुजी बैठे ही हैं, प्रगट हैं, पर हमें उन्हें प्रत्यक्ष कर लेना है...

– पू. पुनीत मल्होत्रा

नए साल के अंदर भगवान और संत की युगल उपासना भीतर में दृढ़ करके, हमेशा दोहराते हुए हम सत्संग और जगत के हर क्रियायोग करते रहें, यही आज के दिन ठहराव करना है। हम यह करते तो हैं, लेकिन कई मौकों पर भूल जाते हैं और फिर भगवान और संत के प्रति विश्वासघात करने लग जाते हैं। पर, हमसे यह न हो। भगवान और संत को हमेशा साथ में रख कर, हमें मिली दिव्य विभूतियों के प्रति अखंड दिव्यभाव रखते हुए हम सुहृदभाव से इस सत्संग में चलते रहें और दूसरों को भी अग्रसर रखें...

—प.पू. गुरुजी

अन्नकूट आरती— नित्य-नित्य नौतम लीला करते प्रभु अविनाशी...

जमो-जमो रे मारा जीवन जुगते, भोजनियाँ रस भरिया रे...

हे गुरुजी !

हमारे जीव की प्रगति हेतु अपनाओ चाहे रीति कोई भी

पर, अब ब्रह्मास्त्र बीमारी का उठाना नहीं...

#LONG LIVE GURUJI

3 नवंबर 2025 – प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य हेतु दिल्ली मुक्त समाज को हूंफ प्रदान करने संतभगवंत साहेबजी का आगमन...

प.पू. आनंदी दीदी से प्रेरित होकर **पू. राकेशभाई** ने **संतभगवंत साहेबजी** से प्रश्न किया—
आपने बताया था कि मुक्तों की कसर टालने के लिए संत बीमारी ग्रहण करते हैं। हमारी ऐसी क्या कसर है, वह आप कृपा करके बताएँ और हम उसे किस प्रकार टाल सकें?

करुणामय संतभगवंत साहेबजी ने प्रगट प्रभु और संबंध वाले मुक्तों को निहारने का दृष्टिकोण बताया—

बापा से किसी ने प्रश्न किया कि हमारी कौन-सी कसर है? बापा बोले—महिमा समझने की कसर है। महाराज-भगवान जब संत द्वारा मानव रूप में विचरते थे, तो उनके अंदर मनुष्यभाव आ जाता था। जैसे बापा के प्रति मनुष्यभाव आता था कि इतना ठीक करते हैं और इतना ठीक नहीं करते। जबकि वे जो करते हैं, वो अनंत जीवों के भले के लिए करते हैं। ऐसा विचार चौबीस घंटे, बारहों मास और जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्था में ऐसा रहे, तब माहात्म्य की कसर टले और वो गुणातीतभाव प्राप्त हो।

काम-क्रोधादिक दोष कोई कसर नहीं है। ये तो देह-physical body के हैं। जब physical body छोड़ देंगे, तो अग्निसंस्कार विधि में जल जाएँगे, साथ में carry forward नहीं होंगे। पर, आत्मा के दोष carry forward होते हैं, जो प्रत्यक्ष भगवान के स्वरूप में मनुष्यभाव, भावफेर और भगवान के भक्तों का अभाव दिलाते हैं। ये चीज़ें आत्मा से चिपकी रहने के कारण दूसरे जन्म में भी भावफेर कराएँगी...

प्रत्यक्ष स्वरूप के साथ रहते हुए unknowingly हमें ऐसा होता है कि ये ठीक नहीं हुआ या सही नहीं बरते। उनकी क्रिया में हमें मायिकभाव-मनुष्यभाव आता है, वो कसर टलवाने के लिए संत जीव की वृत्ति अपने में खींच लेते हैं। ऐसे Purification, उनकी और संबंध वाले भक्तों की महिमा सांगोपांग होने से कसर टल जाती है। सत्पुरुष के अंदर सम्यक् निर्दोषभाव हो, लेकिन भक्तों में न हो तो भी महिमा की कसर कही जाए। ये सब बारीक-बारीक कसर कही जाएँ। ये टालने के लिए ऐसा भजन करना कि सब दिव्य हैं, दिव्य हैं, दिव्य हैं। गुरुजी के साथ जुड़े हुए सभी दिव्य हैं। गुरुजी की आज्ञा के अनुरूप सेवा, कथावार्ता से महिमा बढ़ेगी। मन से निर्दोष मानेंगे, वचन से गुणगान व महिमा गाएँगे और कर्म यानी देह से सेवा करेंगे, तो भगवान की प्रसन्नता कसर टाल देगी।

(5.12.2025, प्रातः)

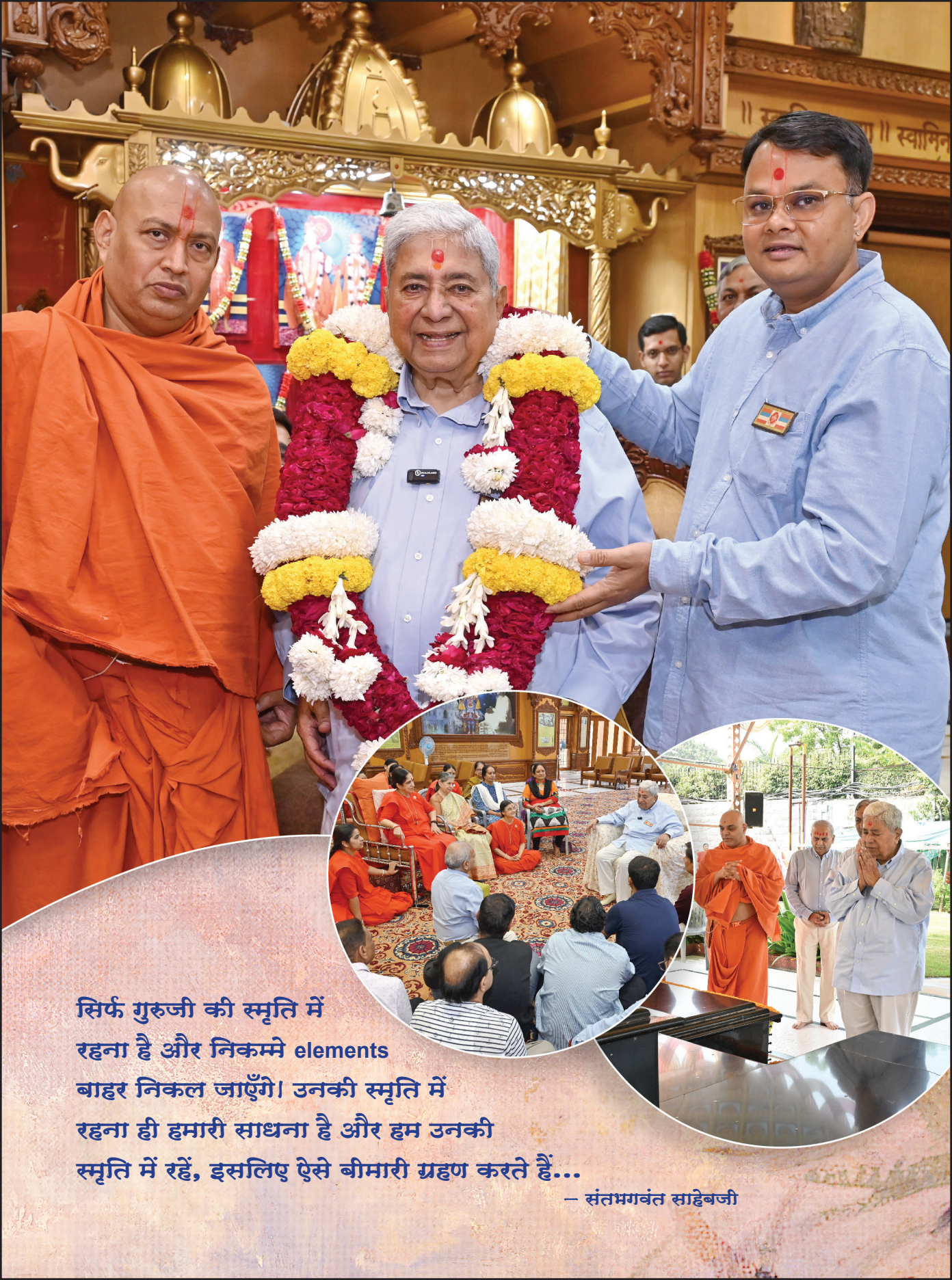

सिर्फ गुरुजी की स्मृति में
रहना है और निकम्मे elements
बाहर निकल जाएँगे। उनकी स्मृति में
रहना ही हमारी साधना है और हम उनकी
स्मृति में रहें, इसलिए ऐसे बीमारी ग्रहण करते हैं...

– संतभगवंत साहेबजी

5 नवंबर 2025, सायं – देव दीवाली के दिन शाकोत्सव...

धाम के मालिक धरती ऊपर
आए हैं गरज़ू होकर...

15 नवंबर 2025 – गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में नव वर्ष स्वागत सभा...

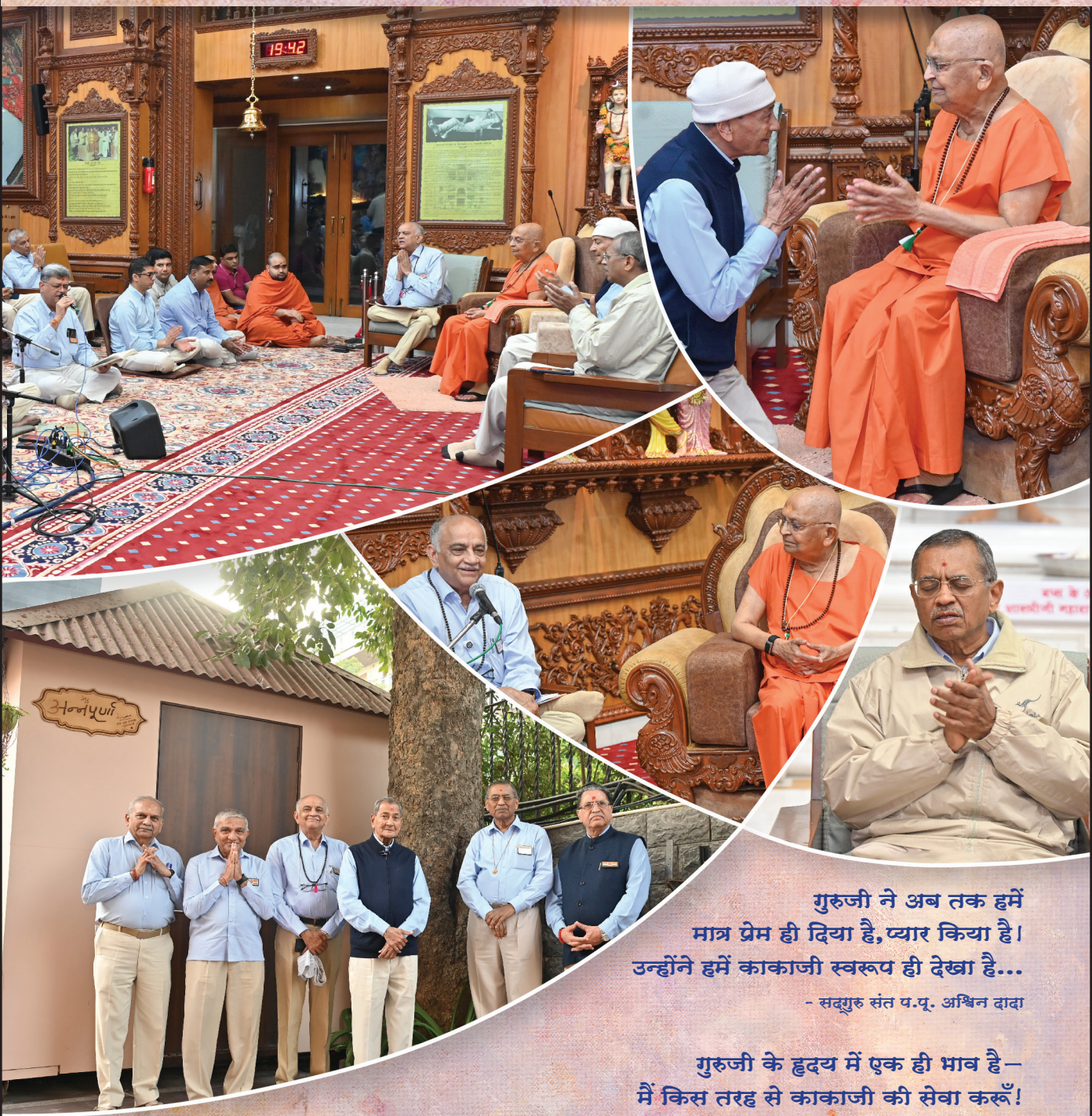

गुरुजी ने अब तक हमें
मात्र प्रेम ही दिया है, प्यार किया है।
उन्होंने हमें काकाजी स्वरूप ही देखा है...

- सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा

गुरुजी के हृदय में एक ही भाव है –
मैं किस तरह से काकाजी की सेवा करूँ!

- प.पू. भरतभाई

भगवान को अखंड धार कर गुरुजी विचरते हैं!
पप्पाजी उन्हें मूर्ति का लूटेरा कहते थे कि जो भी उनके पास आता है, वे उसे राज़ी कर लेते हैं...

- प.पू. बशीभाई

19 नवंबर 2025

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी
एवं संतों के आगमन पर
भजन संध्या एवं सभा...

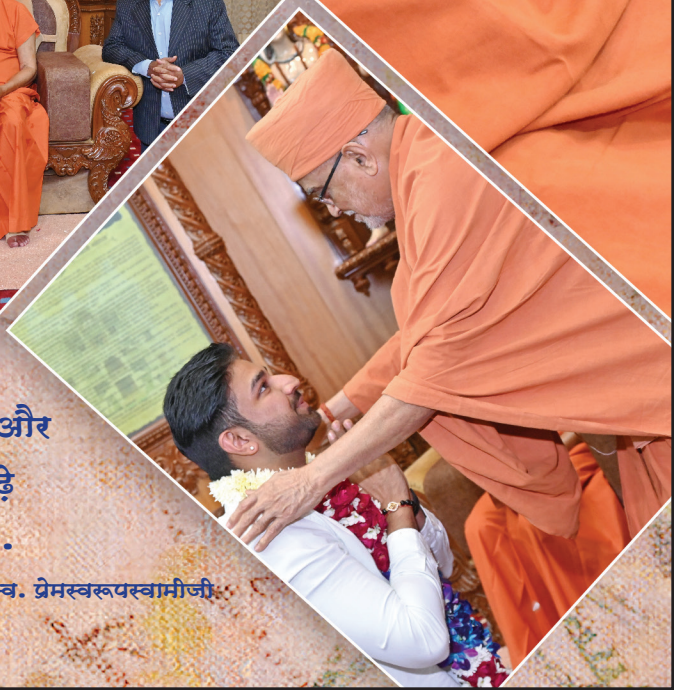

गुरुजी हम सबके लिए
ध्याननीय-सेवनीय स्वरूप हैं।
पर, हम साधक या सेवक मार खा
जाते हैं कि वे हमारी तरह ही बरतते हैं।
स्वरूप को बीमारी नहीं होती, लेकिन उनके
प्रति हमारा जो दिव्यभाव है वो सम्यक् दृढ़ हो और
हमारी आंतरिक आत्मीयता-सुहृदभाव खूब बढ़े
उसके लिए ही बड़े पुरुष चरित्र ग्रहण करते हैं...

-प्र.ब्र.स्व. प्रेमस्वरूपस्वामीजी

24 - 25 नवंबर
प.पू. गुरुजी के
दर्शनार्थ
गुणातीत प्रकाश के ज्येष्ठ
पू. विरेनभाई
और
गुरुहरि पप्पाजी महाराज के
मानसपुत्र
पू. दिलीपभाई भोजाणी
दिल्ली मंदिर आए...

प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ सांकरदा के संतगण पधारे...

मैं ऐसा मानता हूँ कि गुरुजी हमेशा से योगीजी महाराज के साक्षात् स्वरूप थे। जन्म से उन्हें कोई साधना करनी नहीं पड़ी। उनका जीवन बहुत अद्भुत... उनके मन में जगत था ही नहीं! गुरुजी अति दयालु व अनादि के स्वरूप हैं...

- पू. स्नेहलस्वामीजी (सांकरदा)

दिल्ली - बेला रोड 'स्वामिनारायण मंदिर' से प.पू. धर्मनंदनस्वामीजी संतों सहित प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य देखने पधारे...

हे गुरुजी! हमारे जीव की प्रगति हेतु अपनाओ चाहे रीति कोई भी पर, अब ब्रह्मास्त्र बीमारी का उठाना नहीं...

गुरुहरि काकाजी महाराज के लाड़ले और उत्तर भारत के मुक्तों के जीवन प्राण प.पू. गुरुजी ने वर्षों पहले हृदय रोग ग्रहण करके **24 दिसंबर 1997** को मुंबई के लीलावती अस्पताल में जब बायपास सर्जरी कराई, तब सभी का अंतर रुदन से भर गया था कि अहो! प.पू. गुरुजी की अपने भक्तों से कैसी अतिशय प्रीति कि सबके प्रारब्ध, संचित कर्म और मायिक स्पंदन स्वयं अपनी देह पर झेल कर भी अध्यात्म मार्ग पर आगे बढ़ाया। सभी के लिए वो पल ऐसे थे कि मानो पैरों तले ज़मीन खिसक गई, क्योंकि प.पू. गुरुजी को तो कभी शारीरिक रूप से अस्वस्थ देखा ही नहीं था। ज़्यादा से ज़्यादा 99 डिग्री बुखार हुआ, तो उस पर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया और भक्तों के लिए सहजता से सुलभ रहे। तब भजन की निम्न पंक्तियों द्वारा अश्रुओं से भरे नेत्रों से **पू. राकेशभाई** ने सबकी ओर से भगवान स्वामिनारायण, सभी गुणातीत स्वरूपों एवं प.पू. गुरुजी से क्षमायाचना की थी—

अपनाओ चाहे रीति कोई, शस्त्र बीमारी का लेना नहीं
24 दिसंबर हम न भूलें कभी, याद रहे
गुरुजी की मरज़ी में ही जीना और मरना है
काकाजी की धरोहर को संभाल के रखना है...

जीवदशा के आधीन जीते प्राणी का स्वभाव कृतघ्नी है, इसलिए समय गुज़रते वह भूल जाता है कि उसने प्रसंग पर ईश्वर से क्या प्रार्थना की थी और फिर वह धीरे-धीरे अपने मन के मुताबिक़ ही चलने लगता है। इसीलिए 'योगी गीता' पुस्तक के 'स्वातिबिंदु' के दूसरे मुद्दे में **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** से विनती करते हुए **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने कहा है—

आज प्रार्थना करें और कल पलट जाएँ—ऐसा न हो, यह प्रार्थना है।

अब दिल की सच्चाई से हम स्वयं को टटोलेंगे, तो ख्याल पड़ेगा कि 1997 में अपने द्वारा की गई प्रार्थना पर क्या हम अडिग रहे? गुरुहरि काकाजी द्वारा प्राप्त हुई अनमोल धरोहर ही नहीं, चिंतामणि के समान प.पू. गुरुजी को हमने कितना संभाला? यानी समय-समय पर उन्होंने प्रकृति-स्वभाव टालने के लिए जो कुंजियाँ बताईं, उनका प्रसंग पर कितना उपयोग किया? बस उनसे लाड़, प्यार, मान, तारीफ़, प्रसाद आदि पाने की ही अपेक्षाएँ रखते रहे और अपनी भूमिकाएँ छोड़ने के लिए तो तैयार ही नहीं हुए न?

गुरुहरि काकाजी अकसर अपनी बातों में कहते थे—***मैं आपको ताले की चाबियाँ बना कर देता हूँ, लेकिन आप हर बार खो देते हो।***

प.पू. गुरुजी भी गुजराती की कहावत दोहराते हैं—**आरंभे शूरा**...

अर्थात् किसी भी चीज़ को करने के लिए शुरुआत में तो बहुत उमंग होती है, लेकिन समय गुज़रते वो उमंग कम होती चली जाती है। इसी प्रकार, 1997 दिसंबर में प.पू. गुरुजी द्वारा ग्रहण किए इस प्रथम आघात से सब खूब हिल गए थे और ठान लिया था कि अब तक उनकी मरज़ी के अनुसार न चल कर या अपने मायिक स्पंदनों द्वारा उनके हृदय को ठेस पहुँचाई है, लेकिन अब तो मन का तनिक भी गिने बिना बस चल पड़ना है। पर, जैसे कि प्रचलित मुहावरा है— 'कुत्ते की पूँछ कभी सीधी नहीं होती...' अर्थात् कुछ आदतें और स्वभाव नहीं बदलते, ठीक वैसे ही जैसे कुत्ते की पूंछ को सीधा करना मुश्किल है। स्वाभाविक है कि हमें कोई ऐसा कहे तो बुरा लगेगा ही, लेकिन हम सभी अपनी अंतरात्मा में झांकेंगे, तो ख्याल पड़ेगा हमने अपनी ओर से कैसे और कहाँ सत्पुरुष को विवश किया है? फिर भी प्रगट प्रभु का तो जीव से ऐसा अतिशय प्रेम व प्रीति है कि वे अपना निरपेक्ष-निःस्वार्थ प्यार लुटाते ही रहते हैं। इसीलिए **2018 दिसंबर** में गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी का उत्सव जब गुजरात-सांकरदा में मनाया, तब **प.पू. गुरुजी** की आज्ञा से **पू. राकेशभाई शाह** ने भजन बनाया था, जिसके मुखड़े की पंक्तियाँ थीं—

लुटाया तुमने प्यार-रक्षा करी हर बार, भूल न हम पाएँगे
चेतना के शिल्पकार-प्रगट प्रभु साकार, गोद हमें उठाएँ हैं
अपनाया नहीं होता जो आपने तो, होता हमारा क्या हाल?
काकाजी तेरे-पप्पाजी तेरे, बंधुजोड़ी के हम पर अनंत उपकार...

सो, गुणातीत स्वरूपों ने हमारे जीव का रक्षण करते हुए हमेशा प्रसंगों से उबार लिया। पर, जन्मों से अज्ञानता के वश आत्मा ग़फ़लत में जब-जब प्रगट प्रभु की अनुकंपा को take it easy मान कर अपने ढाँचे से चलने लगती है कि तब चेतना के धब्बों को साफ़ करने के लिए, एक ठेस लगा कर-आध्यात्मिकता में आगे धकेलने के लिए संत अपनी ही देह पर सब कुछ झेलते हैं। भक्तों के अनुरागी प.पू. गुरुजी ने भी ऐसा ही किया। इसलिए गुरुग्राम के **मेदांता अस्पताल** में **28 अप्रैल 2022** को हृदय में तीन stents insert कराए और फिर दो साल के अंतराल में ही **14 नवंबर 2024** को इसी अस्पताल में pacemaker की प्रक्रिया करवा कर,

24x7 भक्तों को अपनी मूर्ति का सुख देने-आनंदोब्रह्म कराने के लिए स्वस्थता से तत्पर हुए। Pacemaker को लगाए एक वर्ष भी पूर्ण नहीं हुआ कि मुक्तों को आध्यात्मिकता के मार्ग पर मानो छलाँग लगवाने के लिए, वे अकल्पनीय रूप से अपनी देह पर असहनीय कष्ट झेलने से भी पीछे नहीं हटे।

26 सितंबर 2025 की सुबह प.पू. आनंदी दीदी का कुछ मुक्तों के साथ संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी से आत्मीयता से जुड़े **पू. मोहेन्द्र सिंह वालियाजी** के बड़े सुपुत्र **पू. विनय वालियाजी** के घर हरियाणा-फरीदाबाद जाने का कार्यक्रम था। 25 सितंबर की रात को सभा के पश्चात् सहज ही प.पू. दीदी ने सेवक द्वारा प.पू. गुरुजी को कहलवाया कि वे भी कल पू. विनय वालियाजी के घर आएं। देर रात्रि को प.पू. गुरुजी ने सेवकों से कहा कि कल वे फरीदाबाद जाएँगे। अतः अगले दिन **26 सितंबर** की **सुबह 10:00 बजे प.पू. गुरुजी** नित्य कर्म के लिए bathroom में गए। वहाँ उन्हें थोड़े चक्कर आने लगे, तो सेवकों ने उन्हें पलंग पर लिटा दिया। जब प.पू. गुरुजी को उल्टी होने लगी और सेवकों ने blood pressure बढ़ा हुआ देखा, तो मंदिर के नज़दीक रहते आत्मीयता से जुड़े **डॉक्टर प्रवीण शर्माजी** को तुरंत बुला लिया। उन्होंने प.पू. गुरुजी को injection देकर थोड़ा stable किया और अस्पताल ले जाने के लिए कहा। प.पू. गुरुजी के Heart का follow check up गंगाराम अस्पताल के **Cardiologist डॉक्टर जे.पी. साहनीजी** करते हैं। उनसे बात की तो उन्होंने मंदिर के नज़दीक शालीमार बाग में स्थित **Fortis Hospital** में उनके दामाद **Cardiologist डॉक्टर सौरभ बग्गाजी** के पास जाने के लिए कहा। काफ़ी समय से भक्तों की इच्छा-भावना थी कि प.पू. गुरुजी की आयु को ध्यान में रखते हुए, उनकी सुविधा हेतु एक Vanity Van बनाई जाए, ताकि भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वे आसानी से कहीं भी जा सकें। प.पू. गुरुजी ने इस Vanity Van को **'हंस'** नाम दिया, जो दो दिन पहले ही तैयार होकर **24 सितंबर** को मंदिर आई थी। तो, तुरंत ही प.पू. गुरुजी को इसमें लिटा कर करीब दस मिनट में Fortis Hospital पहुँच गए। स्वरूपों के श्रीमुख से अकसर सुना है कि सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित है। सो, दो दिन पहले Vanity Van बन कर आना और इस समय पर उपयोग में आना, वो सब प्रभु की ही योजना थी। Fortis Hospital पहुँचने के बाद प.पू. गुरुजी की ecg-echo और brain ct scan इत्यादि जाँच हुई। वो सब normal था और vomitings रुकने से प.पू. गुरुजी काफ़ी बेहतर महसूस कर रहे थे। लेकिन, अन्य जाँच-पड़ताल करने के लिए प.पू. गुरुजी को ICU में ले जाया गया और MRI करने का plan करने लगे। Neurology team head **डॉक्टर जयदीप बंसलजी** प.पू. गुरुजी को जब देखने आए, तो उन्हें

सारे symptoms brain stroke के लगे। Brain stroke होने पर blood clot को dissolve करने के लिए तीन-चार घंटे के अंदर ही एक injection दिया जाता है, जिसके खतरनाक side effects भी हो सकते हैं। इस समय श्रीजी महाराज-गुरुहरि काकाजी महाराज की सर्वोपरि सत्ता का दर्शन हुआ। प.पू. गुरुजी को pacemaker लगने के कारण MRI करने में देर लगती, क्योंकि उसकी setting करनी पड़ती है। सो, डॉक्टर जयदीप बंसलजी ने MRI कराने का इंतजार किए बिना ही तुरंत injection लगाने की सलाह दी। Injection के side effects का डर होने के बावजूद भी, प.पू. गुरुजी के साथ गए सेवकों की बुद्धि पर महाराज ने अपना क़ाबू करके-भजन करवा कर injection के लिए 'हाँ' करवा दी और दोपहर 1 बजे उन्हें injection दे दिया गया। उसके बाद MRI करने के लिए ले जाया गया। मंदिर-अक्षरज्योति और स्थानिक सभी मुक्त तो तीव्रता से धुन कर ही रहे थे, साथ ही पू. राकेशभाई और प.पू. दीदी द्वारा गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में यह संदेश दिए जाने के कारण सब जगह प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य हेतु निरंतर धुन होने लगी। MRI के बाद प.पू. गुरुजी को ICU में observation में रखा गया। लेकिन, भक्तों के अनुरागी प.पू. गुरुजी तो लगातार मंदिर जाने का आग्रह करते रहे। अस्पताल में धीरे-धीरे वे stable होने लगे।

30 सितंबर को थोड़ी देर धुन करने के बाद, सेवक **पू. अभिषेक** ने उनसे पूछा— *धुन करते हुए आपने काकाजी की क्या स्मृति की?*

प.पू. गुरुजी ने तुरंत प्रत्युत्तर दिया— ***बस, ठीक कर दो। जल्दी घर (मंदिर) जाना है।***

इसी प्रकार, 1 **अक्तुबर** को **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** ने धुन करने के पश्चात् उनसे पूछा— *आप धुन करते हैं, तब क्या प्रार्थना करते हैं?*

प.पू. गुरुजी ने कहा— ***हमारे में जो कसर है, वो टल जाए—ऐसे आशीर्वाद देना।***

फिर **पू. डॉ. दिव्यांग** ने पूछा— *धुन करते-करते आपको कभी बोरियत नहीं होती?*

प.पू. गुरुजी बोले— ***नहीं।***

पू. डॉ. दिव्यांग ने पूछा— अच्छा लगता है।

प.पू. गुरुजी एकदम बोले— ***Fresh हो जाते हैं।***

पू. डॉ. दिव्यांग ने पूछा— *ऐसा नहीं लगता कि किसी चीज़ के लिए धुन करते हैं, फिर वो ठीक नहीं होती। तब कंटाला या irritation नहीं होता?*

सहजता से **प.पू. गुरुजी** ने कहा— ***वो भी हमारे betterment-अच्छाई के लिए होगा। ये समझदारी देने के लिए...***

प.पू. गुरुजी आज उत्तर भारत के मुक्तों के जीव प्राण-गुरु स्थान पर हैं, गुरुहरि काकाजी महाराज प्रति क्षण उनके द्वारा सबकी परवरिश कर रहे हैं और वे अपने संबंध व संकल्प से सबकी कसर टाल दें, ऐसे समर्थ हैं। लेकिन, अस्पताल में बाह्य दृष्टि से रुग्ण अवस्था में भी प.पू. गुरुजी सबको सदैव सेवक-एक साधक की अदा से जीने की प्रेरणा-करामात देने तत्पर रहे। हमारे प्रति उनके प्रेम की ये कैसी पराकाष्ठा? यहाँ वर्षों पहले **प.पू. गुरुजी** द्वारा अकसर कही गई दंत कथा याद आती है—

एक वृद्धा को अपने पुत्र से अतिशय प्रेम था। पुत्र ने विवाह उपरांत मतभेद के कारण अपनी माता का तिरस्कार कर दिया। परंतु, पुत्र की उपेक्षा के बावजूद भी माँ को तो पुत्र से अतिशय लगाव था। माँ ने घास-फूस का ठेला जाते हुए देखा, तो उसमें से फूस के एक-दो गट्ठे निकाल लिए और पुत्र को देने के लिए घर का दरवाज़ा खटखटाया। लेकिन, उद्वेग से भरे पुत्र ने माँ की एक न सुनी। अंततः जोखिम उठा कर माँ ने घर की खपरैल पर चढ़ कर, झरोखे में से जबरदस्ती फूस के वो गट्ठे फेंक दिए और बोली—खूब बरसात होने पर जब घर की छत से पानी टपकने लगे, तो ये लगा कर छत ठीक कर लेना।

साधारणतः तो इसका सार यह निकलता है कि संसार में रहता जीव मोह-माया से किस हद तक घिरा रहता है। परंतु, आध्यात्मिक दृष्टि से जिस प्रकार प.पू. गुरुजी ने अपनी देह पर ये अनपेक्षित कष्ट सहा, वो भी अपने आश्रितों-भक्तों के प्रति उनकी अतिशय प्रीति कही जाए। मन के आवेग या वृत्तियों के आधीन जीते हुए, हमने भी उस पुत्र की भाँति माँ रूपी प.पू. गुरुजी को अपने वर्तन से कई बार विवश किया-अवहेलना भी की, लेकिन उन्होंने एक तरफा प्रेम बहाते हुए हमें माफ़ करके सच्ची सूझ देकर, सत्कर्म करवा कर पतन से बचाया ही है। उनकी दृष्टि में तो हम अबोध बालक ही हैं और करुणाभरे नयनों से हमें देखते हुए श्रीजी चरणों में वे हमारे लिए निरंतर प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु, ये बेचारे संत प्रधान जीवन जीने की इच्छा करते हैं, तो इनकी सारी कमियों को दूर करके शुद्ध-पवित्र बना दो... ये है प्यार के गंगासागर प.पू. गुरुजी की भक्तवत्सलता!

वास्तव में गुणातीत स्थिति पर पहुँची हुई दिव्य विभूतियाँ ही सत्पुरुष द्वारा भक्तों पर कल्पना से परे की गई अनुकंपा की गहराई समझ सकते हैं और मार्गदर्शन दे सकते हैं। **30 सिंतबर** की सुबह **प.पू. दीदी** ने प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य समाचार देते हुए **सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा** से बात की थी, तो उन्होंने कहा— *उनके स्वास्थ्य के लिए हम सब यहाँ प्रार्थना करते हैं।*

प्रत्युत्तर में **प.पू. दीदी** ने कहा— *आप सबके आशीर्वाद और प्रार्थना से गुरुजी स्वस्थ हो रहे हैं।*

तब **प.पू. अश्विन दादा** ने एक रहस्य उजागर करके आशीर्वाद दिया— ***हम सबको आध्यात्मिता में आगे ले जाने के लिए गुरुजी ने यह लीला ग्रहण की है। उसमें हम सौ प्रतिशत पास हो जाएँ...***

सबके भजन-प्रार्थना से प.पू. गुरुजी स्वस्थ होने लगे और उन्हें ICU में से कमरे में shift कर दिया।

2 अक्तुबर—दशहरा के अनुसार **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी-प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी की पार्षदी दीक्षा तिथि, पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** की **जन्म तिथि** थी। उत्सव मनाने का तो प्रश्न ही नहीं था, परंतु प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य हेतु रोज़ की भाँति सायं 7:30 से 9:00 धुन करने सब एकत्र होने वाले थे। परंतु, मातृत्व के स्वरूप **प.पू. गुरुजी** ने अस्पताल में से संदेश भिजवाया—

सुहृदस्वामी का जन्मदिन और दशहरा है, तो हमेशा की तरह फाफड़ा-जलेबी का प्रसाद रखना।

यह बात सुन कर सबका दिल रो पड़ा—

सौ जननी का प्यार जो भुला दे, प्रियवर गुरु ऐसा मिला...

मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में सबने धुन करके ध्वनि मुद्रण के माध्यम से प.पू. गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी को जन्मदिन निमित्त हार अर्पण करने के पश्चात् प.पू. गुरुजी की आज्ञानुसार सबने फाफड़ा-जलेबी का विशिष्ट प्रसाद लिया।

3 अक्तुबर की दोपहर करीब ढाई बजे **प.पू. गुरुजी** अस्पताल से मंदिर लौटे, तो पूरा परिसर जीवंत हो उठा! डॉक्टर्स की सलाह के अनुसार प.पू. गुरुजी को कुछ समय के लिए isolation में रखना था। जैसे कि हम सब जानते हैं कि प.पू. गुरुजी संतों-भक्तों के बिना कमरे में अकेले तो रहते ही नहीं, सो सेवकों ने उनके कमरे का दरवाज़ा काँच का बनवा दिया, ताकि भक्त दूर से दर्शन कर सकें और प.पू. गुरुजी को अकेलापन महसूस न हो। परंतु, भक्तों के संगी प.पू. गुरुजी ने सायं 7:30 बजे तो कमरे से बाहर आकर अपने सोफे पर बैठने की इच्छा प्रकट की। एक-दो बार सेवकों ने प्रार्थना की कि आज यहीं से दर्शन दे दें, परंतु वे जिस प्रकार चिदाकाश हॉल में बैठने का आग्रह कर रहे थे, उसे देख कर **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** की **प्रकरण 5 की 142वीं बात** का स्मरण हो रहा था—

स्वरूपानंदस्वामीजी के अस्वस्थ होने पर उनसे पूछा—आपको बहुत कष्ट हो रहा होगा?

उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा— टट्टू दुबला हुआ है, अस्वार तो ताज़ा है।

अर्थात्—**काया भले कमज़ोर हुई है, लेकिन आत्मा तो ऊर्जावान है।**

यूँ अंतःकरण से सबल प.पू. गुरुजी मुक्तों को दर्शन देने के लिए चिदाकाश हॉल में सोफे पर विराजमान हो गए। इतना ही नहीं सामान्य रीति से बातचीत भी की और **पू. राकेशभाई शाह, पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** और **सेवक पू. विश्वास** से भजन सुने। उनके हावभाव से कोई अनुमान नहीं लगा सकता था कि इतनी बड़ी तकलीफ़ से वे गुज़र रहे हैं। दरअसल, प्रभुधारक ऐसे संतों का विश्राम भक्तों को ब्रह्मानंद कराने में ही निहित है। गुणातीत स्वरूपों के स्वमुख से ही **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** का निम्न प्रसंग सुना है—

एक बार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज को 4 डिग्री ज्वर हुआ था। तब वे सारंगपुर मंदिर में विराजमान थे। डॉक्टर्स के कहने पर उन्हें भी isolation में रखा गया था। कक्ष के बाहर दूर से ही सब दर्शन करते थे। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने भक्तों को देखा तो इन सबको अंदर आने के लिए कहा। एक-दो बार संतों-सेवकों ने कहा कि डॉक्टर ने आपको isolation में रहने के लिए कहा है। परंतु, उन्होंने तो आग्रहपूर्वक सबको अपने कक्ष में बुला लिया और करीब 3-4 घंटे बातें की। आश्चर्य की बात यह हुई कि बाद में उनका बुखार नापा तो उन्हें ज्वर था ही नहीं।

अतः यदि बुद्धि बंद करके, भजन-प्रार्थना करते हुए केवल सत्पुरुष की लीला निहारेंगे, तो वे बख़्शीश में हमें प्रकृति-स्वभावों से परे कर देंगे। प.पू. गुरुजी का भी यही उद्यम है कि उनके प्रेमी मुक्त इस राह पर चलें।

प.पू. गुरुजी का अथाह परिश्रम यहीं सीमित नहीं रहा। **6 अक्तुबर-शरद पूर्णिमा** को **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की प्राकट्य तिथि** के साथ **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी- प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** की **भागवती दीक्षा तिथि** तथा **प.पू. दिनकर अंकल** की **प्राकट्य तिथि** थी। प्रति वर्ष की तरह प्रसाद लेने के पश्चात् रात्रि 9:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में सत्संग सभा का आयोजन था। **पू. राकेशभाई शाह, पू. रवि गुप्ताजी, पू. अजय तनेजाजी, पू. राजीव शर्माजी, पू. पंकज रियाज़ी, पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा, पू. ऋषभ नरुला** उत्सव निमित्त विशिष्ट भजन प्रस्तुत कर रहे थे कि प.पू. गुरुजी सबको दर्शन देने के लिए कल्पवृक्ष हॉल में आए... सबको अत्यंत खुशी भी थी; परंतु अंतर भक्तों के प्रति प.पू. गुरुजी के लगाव को देख कर गद्गद् था, क्योंकि उन्हें अस्पताल से आए **तीन दिन** ही हुए थे। दरअसल, उनके पल-पल की क्रिया यही दर्शाती है कि **'भक्तों की भक्ति-पराभक्ति' करना और उसके लिए सबको प्रेरित करना ही उनका जीवन ध्येय है।**

विशिष्ट भजनों के पश्चात् प.पू. गुरुजी की निश्रा में सभी संतों ने शरद पूर्णिमा निमित्त मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्य की आरती संपन्न की। शरद पूर्णिमा के अनुसार **पू. आनंदस्वरूपस्वामी, पू. योगीस्वरूपस्वामी, पू. सरयूविहारीस्वामी** की **भागवती दीक्षा** एवं **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** की **सेवक दीक्षा** की वर्षगांठ थी। **गुरुहरि काकाजी महाराज** द्वारा उत्तर भारत के मुक्तों को प्राप्त हुए गुणातीत परंपरा के **प.पू. गुरुजी** को इन चारों ने मिल कर **अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की प्रसादी का हार** सभी की ओर से अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने चिदाकाश के लिए प्रस्थान किया। तभी **पू. राकेशभाई** ने प.पू. गुरुजी को दर्शन देने हेतु सबकी ओर से धन्यवाद दिया और फिर श्रीजी महाराज एवं सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में आज के पावन दिन की निम्न प्रार्थना की—

आज मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन! उसी गुणातीत परंपरा के प.पू. गुरुजी का संबंध हमें मिला है। वे निरामय स्वास्थ्य से चिरकाल तक हमें अपनी मूर्ति का सुख देते रहें। इस हेतु हम अपना कुछ भी प्रिय न रखें और उन्हें खूब पसंद सुहृदभाव और एकता से जीने के लिए तीव्र अभीप्सा से धुन-भजन-प्रार्थना करते रहें...

तदोपरांत ध्वनि मुद्रण के माध्यम से प.पू. गुरुजी की परावाणी में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्रेरणादायी स्मृति प्रसंगों का लाभ लिया और फिर अपने गंतव्य स्थान के लिए प्रस्थान किया।

शरद पूर्णिमा उत्सव के बाद दीपोत्सव के मंगलकारी दिन द्वार पर आहट देने लगे। इस बार **18 अक्तुबर** को **'धनतेरस'** का शुभ दिन आया। यह हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है, जो दीवाली से ठीक दो दिन पहले कार्तिक महीने में कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता है। शास्त्रों के अनुरूप समुद्र मंथन के समय भगवान धन्वंतरि इस दिन अमृत का कलश लेकर प्रकट हुए थे। मान्यता है कि भगवान धनवंतरि विष्णु के अंशावतार हैं। संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए ही भगवान विष्णु ने धनवंतरि का अवतार लिया था। यह भी धारणा है कि आज के ही दिन माँ लक्ष्मीजी और कुबेरजी की भी उत्पत्ति हुई थी। भगवान धन्वंतरि को आरोग्यता के स्वामी के रूप में और माँ लक्ष्मी को धन और समृद्धि की स्वामिनी जाना जाता है। इन दोनों का संबंध यशः-समृद्धि से है, इसलिये भी इसे धनतेरस या धन त्रयोदशी कहा जाता है। अतः धन और नीरोगता के लिए यह त्यौहार मना कर आशीष याचना करते हैं।

मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में इस उपलक्ष्य में सायं 7:00 बजे **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने महापूजा आरंभ की। षोडशोपचार पूजन विधि संपन्न करते हुए उन्होंने—

नीराजनं गृहाणेश पञ्चवर्ति-समन्वितम्।
तेजो राशिर्मया दत्तो लोकानन्द-कर प्रभो।।

श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडल सहिताय आरार्तिक्यं समर्पयामि।

अर्थात्— **श्री ठाकुरजी की आरती प्रारंभ करने से पूर्व उपरोक्त श्लोक का उच्चारण किया ही था कि प.पू. गुरुजी ने कल्पवृक्ष हॉल में प्रवेश किया। मानो मुक्तों के अंतर की पुकार स्वीकार करके, वे अपनी निश्रा में मांगलिक आरती संपन्न कराने के लिए उपस्थित हो गए।** आरती के पश्चात् मंत्रपुष्पांजलि श्लोक के पश्चात् निम्न **संकल्प** करके धुन की—

आज प.पू. गुरुजी की निश्रा में विशेष महापूजा कर रहे हैं। आज माँ लक्ष्मीजी की पूजा-आराधना की जाती है। प.पू. गुरुजी कहते हैं कि लक्ष्मीजी पतिव्रता हैं। इसलिए जहाँ नारायण निवास करते हैं, वहीं उनका निवास होता है। ऐसे प्रभु के अखंड धारक संत प.पू. गुरुजी का संबंध गुरुहरि काकाजी महाराज ने हमें मौज में दे दिया है। सो, सर्वप्रथम उनके निरामय स्वास्थ्य हेतु प्रार्थना करते हैं। प.पू. गुरुजी को अति प्रिय सुहृदभाव से जीकर, उनसे संबंध दृढ़ करके प्रभु का शाश्वत आसरा करेंगे, तो श्री लक्ष्मीजी की सदैव हम पर कृपा दृष्टि रहेगी और तन, मन, धन व आत्मा से सदा सर्वथा सुखी-समृद्ध रहेंगे...

आज **पू. ऋषभ गोयल** का जन्मदिन था, तो महापूजा विधि पूर्ण होने के उपरांत उन्होंने प्रभु को धन्यवाद का भाव प्रकट करते हुए— ***मुझे तुमने काका बहुत कुछ दिया है, तेरा शुक्रिया है-तेरा शुक्रिया है...*** भजन प्रस्तुत किया। सन् 2006 में अमदावाद-मुंबई के कई मुक्त दीवाली मनाने के लिए दिल्ली मंदिर आए थे। तब **'बड़े घर दीवाली शिविर'** के दौरान प.पू. गुरुजी ने **'योगीजी महाराज की सत्संग कथाएँ'** पुस्तक में से **'नाई भगत'** के प्रसंग का निरुपण करते हुए कुटुंबभाव के सत्संग का महत्व समझाया था और प्रभु व संत के साथ संबंध दृढ़ करके सच्चा धन प्राप्त करने की सीख दी थी। सो, अंत में ध्वनि मुद्रण के माध्यम से **प.पू. गुरुजी** के वो आशीर्वाद प्राप्त किए और प्रसाद लेने के बाद सबने विदाई ली। **19 अक्तुबर** को **'अक्षर चौदस'** (छोटी दीवाली) और अगले दिन **20 अक्तुबर** को **'दीपावली'** का प्रेरणादायी पर्व था—

बुराई पर अच्छाई की जीत: दीपावली हमें सिखाती है कि चाहे कितनी भी अंधकारमय परिस्थितियां हों, अंततः अच्छाई की जीत होती है, जैसा कि भगवान राम के रावण पर विजय वृतांत से दर्शन होता है।

सकारात्मकता और प्रेम: यह पर्व हमें अपने जीवन से नकारात्मकता, ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने और प्रेम, सद्भाव व आनंद प्रसार करने की प्रेरणा देता है।

आंतरिक और बाहरी प्रकाश: दीपावली न केवल घरों को दीयों से रोशन करती है, बल्कि हमारे भीतर भी ज्ञान और आशा की रोशनी जगाती है।

सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व: यह त्यौहार परिवारों में सामंजस्य स्थापित करता है, एकता को बढ़ावा देता है और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को सशक्त करता है।

ईश्वर के अस्तित्व का बोध: यह त्यौहार यह विश्वास भी व्यक्त करता है कि ईश्वर हमारे जीवन को प्रकाशित करते हैं। केवल उनके संबंध से ही तिमिर दूर हो सकता है।

ऐसे पावन दिन की सुबह **प.पू. गुरुजी** ने जो **नित्य पूजा** की, उसे **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने कलात्मक रूप से सजाया था और उसमें कृत्रिम दीपक भी प्रज्वलित किए थे। जिस प्रकार धनतेरस के दिन विशिष्ट महापूजा हुई, उसी प्रकार **20 अक्तुबर – दीपावली** की **सायं 7:00** बजे कल्पवृक्ष हॉल में प्रभु से आशीष पाने पू. मैत्रीशीलस्वामी ने महापूजा प्रारंभ की। मंत्रपुष्पांजलि के बाद प.पू. गुरुजी एवं पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी ने हरिभक्तों द्वारा रखे गए बही-खातों का पुष्प, अक्षत और कंकु से पूजन किया। फिर सबकी ओर से दीपावली की निम्न **प्रार्थना** के साथ धुन हुई –

हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों...

आज दीवाली के शुभ दिन प.पू. गुरुजी की निश्रा में विशेष महापूजा कर रहे हैं। आज भगवान श्री राम के अयोध्या आगमन पर सबने दीपमाला से उनका अभिनंदन करके दीपावली पर्व मनाया था। हम सब कितने सौभाग्यशाली हैं कि प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत ने हमें अपना लिया है और एक दिव्य सत्संग समाज में जोड़ दिया है। हम एक-दूसरे का सहर्ष स्वीकार करके सुहृदभाव के दीप प्रगटाएँ और प.पू. गुरुजी को राज़ी कर पाएँ...

महापूजा के समापन के बाद **पू. राकेशभाई शाह** एवं **पू. ऋषभ नरूला** ने 'एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है...' भजन प्रस्तुत किया। **पू. पंकज रियाज़ी** ने **भगवान श्री राम** का भजन – 'सत्य की राह दिखाएँ राम, ज्ञान का दीप जलाएँ राम...' गाकर अपना भाव अर्पण किया। तत्पश्चात् अनायास ही **प.पू. गुरुजी** ने **पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, पू. आशिष शाह** और **सेवक पू. अभिषेक** पर अपनी प्रसन्नता बरसाते हुए तीनों को एक साथ हार पहना कर कहा – ***आशीर्वाद माँगने नहीं पड़ते। हम वर्तन ही ऐसा रखें कि आशीर्वाद दिल से फिसल जाएँ। सभी***

का आसरा आशीर्वाद का ऐसा ही है (सभी ऐसे आशीर्वाद पाना चाहते हैं), तो महाराज हम पर ये आशीष बरसायेंगे, बरसायेंगे, बरसायेंगे ही।

ये अद्‌भुत आशीष प.पू. गुरुजी ने केवल इन तीनों को ही नहीं, अपितु पूरे सत्संग समाज को प्रदान किए। तत्पश्चात् दीपावली की विशेषता बताती प.पू. गुरुजी की परावाणी का लाभ ध्वनि मुद्रण के माध्यम से प्राप्त करने के बाद सबने प्रसाद लेकर प्रयाण किया।

इस बार भी दो दिन दीपावली तिथि होने के कारण **22 अक्तुबर** को **अन्नकूटोत्सव** था। सुबह 7:00 बजे से भक्तगण अन्नकूट भोग के लिए अपने घरों से विविध व्यजंन बना कर लाने लगे। करीब सुबह 10:00 बजे सभा खंड में सब एकत्र हुए। पृष्ठ भूमि पर भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों की लुभावनी मूर्ति का दर्शन हो रहा था और नूतन वर्ष पर प्रार्थना का सूत्र लिखा था—

एक दूसरे का सहर्ष स्वीकार करके सुहृदभाव के दीप प्रगटायें...

पू. राकेशभाई शाह, पू. पंकज रियाज़जी, पू. हृदय वर्मा, पू. ऋषभ नरूला, पू. विक्की भइया, पू. नक्षत्र, पू. पुण्यम् मल्होत्रा की भजन मंडली ने वातावरण को दिव्यता से भर दिया। सर्वप्रथम **पू. चिंतन अग्रवाल** ने काव्यात्मक शैली में प.पू. गुरुजी के माहात्म्य का संचार किया—

*...**गुरुजी कहते हैं कि संप, सुहृदभाव, एकता—इन तीनों को यदि हम अपने जीवन में दृढ़ कर लें, तो जो वे चाहते हैं वो हो जाएगा।** भगतजी महाराज ने वड़ताल मंदिर के गोरधन कोठारीजी से कहा था—**'मंदिर के द्वार से अंदर आने वाले हर एक को जब तक आप ब्रह्म की मूर्ति नहीं मानोगे, तब तक तो रोटी की कोर कच्ची है।'** यानी सही अर्थ में सत्संग नहीं हुआ कहा जाए। यह सुन कर कोठारीजी हैरान रह गए कि इन्हें ब्रह्म की मूर्ति कैसे मान लूँ? जबकि इनमें से कइयों को तो मैंने ही प्रायश्चित-आशीर्वाद दिया है। भगतजी के कहने का मतलब यह था कि जब तक ऐसा नहीं मानेंगे, तब तक उद्धार नहीं होगा। क्योंकि **यदि हम मानते हैं कि God element सब में present है, तो आपको मानना चाहिए कि वो ब्रह्म का तत्त्व दूसरे में भी है और आप में भी है।***

मैं अगर सुहृदभाव की बात करुँ; तो मैंने दूसरों से रखा या नहीं, ये बताना बहुत मुश्किल है। Obviously I am not perfect, हम सब में कोई भी नहीं है। पर हाँ, मैं ये ज़रुर बता पाऊँगा कि दूसरों ने मेरे साथ कैसे, कितना और कब सुहृदभाव रखा! गुरुजी और दीदी तो सबके प्रति जो भाव रखते हैं, वो अलग ही है।** That is beyond divine. पर, जो भक्त हैं, उनके बारे में बताना चाहूँगा। मेरी सेवा audio department में होती है। **मैंने बहुत गलतियाँ

की हैं और आज भी करता हूँ। कई बार देर से भी सेवा में आता हूँ, लेकिन अक्षरस्वामी, आशीष, पुनीत और जीतू ने अपनेपन से कई बार बोला भी, लेकिन उन्होंने मेरे साथ सुहृदभाव रखा। *कभी उन्होंने ये नहीं बोला कि आगे से आना मत या बुरा माना।* ***मेरा भाव तो यही है कि मेरे केंद्र बिंदु गुरुजी हैं और रहेंगे। आज उसका ही नतीजा यह है कि मुझे और मेरे परिवार को एक कामयाबी यह मिली है कि हम सब गुरुजी से एक साथ जुड़े हुए हैं।***

काकाजी *का एक प्रसंग है कि उनके ऑफिस में बापा ने किसी भक्त को नौकरी पर रखवाया। तो, वो भक्त टाइम से आते भी नहीं थे और देर से आने के बाद भी अखबार या सत्संग की किताबें पढ़ते। एक-दो बार उन्हें इसके लिए टोका, तो जवाब मिलता—आपको सत्संग की महिमा नहीं है? तब भी काकाजी-पप्पाजी उसे कुछ नहीं कहते, क्योंकि बापा ने उन्हें रखवाया था, यूँ उन्होंने सुहृदभाव रखा। मेरे साथ अगर ऐसा हो तो शायद मैं 'भाव' रखूँगा, पर 'सुहृद' तक पहुँचूँगा, वो मेरी अब भी कसर है।* ***मैं अकसर घर पर भी discuss करता हूँ कि we are family, me-wife-kids, लेकिन flip side of it is that कि वो भी सत्संगी हैं। तो, क्या मैंने उनके साथ सुहृदभाव रखा? I personally feel that is a benchmark for me. Am I able to? कि इनके साथ भी मुझे वो ही भाव रखना है, जो मैं बाहर रख रहा हूँ। Charity begins at home. आज ये प्रार्थना कि मैं अपने 'भाव' को 'सुहृद' में बदल दूँ। मैं जिससे भी मिलूँ, चाहे घर वाले हों, चाहे दोस्त हों, कोई भी हों, ख़ास कर सत्संग परिवार... सबको लगे कि चिंतन ने गुरुजी को मान कर 'सुहृदभाव' संपन्न किया है।***

गुरुजी के लिए कुछ पंक्तियाँ सुनाऊँगा। राधा-कृष्ण के pure relationship से हम वाक़िफ़ हैं। राधा कैसे कृष्ण का इंतज़ार करती। कृष्ण के मन में राधा बसी रहती। कृष्ण भगवान थे, इसलिए उन्हें बहुत काम होते थे, तो कभी available हों न हों, पर राधा उन्हें persuade कर ही लेती। It was a very different kind of love. तो, ***मैंने गुरुजी के साथ अपने संबंध को राधा-कृष्ण की simile में डालने की कोशिश की, just to indicate where I am still going wrong and where my flaws are और गुरुजी हमें कैसा feel करवाते हैं।***

Title है— ***कौन कृष्ण और कौन राधा?***

हम अपने लिए गुरुजी को कई बार कितना इंतज़ार कराते हैं। फिर हम शाम को न जायें तो वे बोलेंगे कि अरे, आप आए नहीं? सबको ये experience है। गुरुजी और दीदी फ़ोन कर-करके बुलाते हैं। फिर जब मंदिर जाओ, तो हमें देख कर कितने खुश होते हैं। यदि मैं कहूँ कि आज

रात को मैं मंदिर में रुकूँगा, तो उनके लिए पता नहीं क्या ही कर दिया, ऐसे राज़ी होते हैं। उस भाव से मैं कहना चाहता हूँ—

कृष्ण जब मेरे बन जाते हैं राधा!

Actually तो गुरुजी हमारे कृष्ण हैं और मैं राधा हूँ।

असमंजस में मेरा दिल रह जाता है आधा!

मैं हैरान रह जाता हूँ कि गुरुजी को कितनी गरज! मुझे तो इतनी नहीं है।

क्या है इस दुनिया में ऐसा कि मैं दे नहीं पाता तुमको एक वादा!

वो क्या? एक commitment कि मैं आपकी आज्ञानुसार चलूँ।

तुमको है चाह मेरी देखते हो राह मेरी, और मैं हूँ कि देता हूँ झाँसा,

फिरता हूँ तुमसे ही भागा-भागा!

मतलब, गुरुजी मैं अभी नहीं आऊँगा, शाम को आता हूँ, अच्छा कल देखता हूँ, आज busy हूँ। किसी न किसी स्टेज पर हम सब इससे relate कर सकते हैं।

क्यों नहीं मुझे तुम्हारे प्रेम पर भरोसा या सोचता हूँ मैं कि

तुम्हारे लिए मेरे जैसा और कौन होगा?

क्योंकि भ्रम है मुझे कि मैं कृष्ण हूँ और तुम मेरी राधा!

As Radha मुझे शायद अपने आप पर घमंड है कि मेरे जैसा आपके लिए कौन होगा? Obviously ये ग़लत घमंड है।

तुम जब बनते हो राधा, माँगते नहीं मुझसे कुछ ज़्यादा

चाहते हो कि रखूँ मैं तुम्हारे प्यार का सम्मान

एक बार तो मिलने आऊँ सुबह, दिन या शाम!

That's not too much to ask

वो पल मिलन का देता है तुम्हें जो खुशी!

गुरुजी की आँखें बोलती हैं, वो खुशी आप उनकी आँखों में देख सकते हो।

ऐसी खुशी मेरी आँखों में क्यों नहीं बसी?

क्यों नहीं होता मैं तुम्हारे जितना ही प्रसन्न?

हे गुरुदेव कर दो मुझे भी उस भाव से संपन्न

मैं चाहता हूँ तुम रहो मेरी राधा और मैं रहूँ तुम्हारा कृष्ण!

क्योंकि राधा was the only one जिसके प्रेम में कृष्णजी चले आते थे।

पर, ऐसा हो कृष्ण के जो करे राधा को पल-पल याद और पूरे हृदय से नमन

न तरसाऊँ मैं तुझको, न कराऊँ इंतज़ार

तेरे याद करने से पहले तेरे सामने रहूँ तैयार

है रिश्ता हमारा बहुत ही सीधा सादा

तुमने ही बनाया है मुझे कृष्ण और तुमने ही प्यार किया जैसे राधा!

मेरा कुछ नहीं है you are the God you are the lover.

आप ही कृष्ण हो आप ही राधा हो।

संजो के इस प्यार को, दिल आँखों में ही चाहता हूँ बसाना

और नहीं अब करूँ मैं कोई बहाना

तुम रहना अखंड धरती पर भी मेरे साथ मेरे कृष्ण!

हम कहते हैं न कि जितने भी यहाँ बैठे हैं, सबका पूर्व का कोई संबंध है। गुरुजी हमारे साथ कब से आ रहे हैं, हमें अपने साथ रख रहे हैं।

आज भी इस मनुष्य योनि में वे हमारे साथ हैं।

अकेले नहीं जी पायेगी, अधूरी रह जाएगी तुम्हारी राधा!

Long live our Dear Guruji...

फिर पू. पुनीत मल्होत्रा ने अपने वक्तव्य की शुरुआत ही की थी कि **प.पू. गुरुजी** का आगमन हुआ, तब पूरे पंडाल में अलौकिक आनंद की लहर छा गई। **पू. पुनीत मल्होत्रा** ने कई तथ्यों के आधार पर **'सुहृदभाव'** शब्द का महातम बताते हुए आशीष याचना की—

सत्संग में दिव्यभाव, कुटुंबभाव और सुहृदभाव जो तीन basic fundamental principles हैं, *इन सभी के बारे में मैं गुरुजी के मुंह से पिछले 28 साल से सुनता आ रहा हूँ। इसमें भी गुरुजी ने stages में काम किया। 25 साल पहले कथा में गुरुजी दिव्यभाव की बात पर बार-बार ज़ोर देते कि मनुष्य रूप में-संत के रूप में हमें जो प्रगट भगवान की प्राप्ति हुई है, उनमें दिव्यभाव रखें। फिर उन्होंने कुटुंबभाव का principle स्थापित किया और अब पिछले कई साल से गुरुजी सुहृदभाव पर ज़ोर दे रहे हैं।*

स्वामिनारायण संप्रदाय में कुटुंबभाव के दो बड़े उदाहरण landmark-benchmark बने हैं...

पहला— *कोई मंदिर या आश्रम न बना कर महाराज ख़ुद कई सालों तक दादा खाचर के दरबार में रहे।*

दूसरा *— शास्त्रीजी महाराज के वचन से गुणातीत समाज में काकाजी और कांतिकाका blood relation न होते हुए भी भाई-भाई बनकर रहे। कुटुंबभाव की ये भी unparallel मिसाल है। गुरुजी बताते हैं कि काफ़ी समय तक तो उन्हें ये पता भी नहीं था कि काकाजी और कांतिकाका real brothers नहीं हैं। तो किस हद तक वे एकता से जिए होंगे।*

बात करें सुहृदभाव की, तो यह आगे की कक्षा है। उसे यदि कोई दृढ़ कर ले, तो संत खुद उस पर आशीष बरसाने लगते हैं। वो कैसे?

तो, ***गढ़डा प्रथम प्रकरण 28*** *में* ***श्रीजी महाराज*** *ने कहा है—*

अगर सत्संग में कोई औरों के दोष देखने लगे, तो उसी दिन से उसका पतन शुरु हो जाता है। वो तो ऐसा समझता हैं कि मैं दूसरों से श्रेष्ठ हूँ, जबकि उसी दिन से सत्संग में उसकी growth रुक जाती है। *भजन में हम सुनते हैं और वचनामृत में भी लिखा है—ऐसा जीव अधजली लकड़ी की तरह सुलगता रहता है। उसका कारण यह है कि वह दूसरों के दोष देखने लगा। महाराज ने कहा है कि ऐसा व्यक्ति पूरे दिन न चैन से बैठ पाएगा न सो पाएगा। इसलिए* ***प्रगति करवाने के लिए अपने आप को ज़ीरो मानना ही पड़ेगा। ये मानना पड़ेगा कि जो साथी समाज हैं, वो उससे श्रेष्ठ हैं।*** *यूँ अपनी calculations शांत करनी ही पड़ेगी।*

2024 *के अनुष्ठान शिविर में* ***काकाजी की हीरक जयंती*** *के उपलक्ष्य में* ***हरिप्रसादस्वामीजी*** *द्वारा प्रकाशित कराई गई* ***'सहृदयी'*** *किताब को निरूपण करने के लिए चुना गया। उसमें श्रेयार्थी साधकों एवं गृहस्थों के लिए संत समागम, सेवा, स्वधर्म, स्वामी सेवकभाव, समर्पण जैसे कई basic fundamental chapters हैं। उसमें* ***11वाँ अध्याय 'सुहृदभाव'*** *पर आधारित है। उसमें लिखा है कि* ***अगर कोई साधक सुहृदभाव की मंगलकारी भावना को नहीं समझेगा, तो गुरु गुणातीत की दृष्टि में उसकी साधना अधूरी ही रहेगी। जीवित रहने के लिए जैसे जल, अन्न, और वायु चाहिए, इनके बिना जीवित नहीं रह सकते। वैसे ही सुहृदभाव के बिना प्रभु के दिल में स्थान नहीं बना पाएंगे। मूर्ति में लय और लीन होने के लिए सुहृदभाव प्राण के समान है।*** ***गुणातीतानंदस्वामी*** *की बातों के* ***तीसरे प्रकरण की 70वीं*** *में लिखा है कि जीव के कल्याण के लिए चार basic चीज़ें हैं—****आज्ञा, उपासना, बड़े एकांतिक संत में प्रीति और भगवदी से सुहृदभाव। सुनने में ऐसा लगता है कि संत से प्रीति हो जाए, तो बाकी सब तीनों आ जाएगीं।*** *लेकिन* ***योगी बापा*** *ने कहा है—* ***यदि सुहृदभाव सिद्ध हो जाएगा, तो बाकी चीज़ें सिद्ध होंगी।*** *एक बार योगी बापा मुंबई के सत्संग मंडल के साथ बैठे थे, तो उन्होंने सबसे पूछा—अगर मुंबई को सत्संग के रंग में रंगना हो, तो किस रंग में रंगा जाए? सब सोचने लगे कि रंगने से क्या*

मतलब? तब बापा स्वयं बोले—एक ही रंग में रंगा जा सकता है और वो है संप, सुहृदभाव, एकता! सब ने पूछा कि इसका मतलब क्या? तो बोले—जब ये तुम्हारे जीवन में आ जाएगा, तो उसकी सुवास से सत्संग महकेगा और लोगों को भगवान के मार्ग पर चलाने का प्रेरणा मार्ग बनेगा। इससे कल्याण योजना प्रगति को पाएगी। ***सुहृदभाव यानी एक-दूसरे का स्वीकार करना। बापा ने यह भी कहा कि जैसे अपने बच्चे या परिवारजन का कोई दोष दिखेगा नहीं। मानो मुझे अपने बेटे का कुछ ग़लत दिखेगा, तो मैं उसे ढकने की कोशिश करूँगा कि अरे! इसके बारे में समाज को पता चलेगा, तो क्या होगा? बापा के कहने का अर्थ था कि जिस तरह परिवार वालों को दुनिया से बचाते हैं, वैसा ही सत्संग में करना है। सत्संग एक extended family है। उसका जो दोष दिखाई पड़ता है, वो दरअसल तुम्हारे भीतर है, उसमें तो है ही नहीं। गुरुजी कहते हैं satsang is holy family और बापा कहते extended family.***

अपने देह त्याग से पहले बापा ने ***1970*** *में nairobi-kenya की last trip की थी। वैसे डॉक्टर्स ने बापा की तबीयत के कारण उन्हें travelling करने से मना किया था, पर फिर भी बापा गए थे। वहाँ अलग-अलग जगह पर रोज़ सभा करते थे। एक दिन शाम को छः बजे सब सभा के लिए तैयार हो रहे थे कि तभी एक भक्त ने बापा को प्रेम से विनती की कि आप इस बार आए हो, तो मेरे घर पधरावनी करोगे? बापा ने 'हाँ' की और उनके घर गए। उन्होंने सोचा था कि सभा से पहले लौट आएँगे। बापा की ये बात सत्संग के frontliner administrators-organisers को अच्छी नहीं लगी। बापा को सभा में आते-आते देर हो गई, तो उन सबने बापा को फरियाद करते हुए कहा कि आप चले गए, यहाँ सब व्याकुल बैठे थे। आपकी तबियत भी ठीक नहीं थी, आपको नहीं जाना चाहिए था। बापा ने विनम्रता से कहा—उस भक्त को ज़रूरत थी, इसलिए मैं गया था। मुझे तो ऐसा था कि आप लोग खूब भजन कर रहे हो और मिलजुल कर रहते हो, इसलिए आप लोगों के लिए मैं kenya में आया हूँ। आप लोग ही यदि ऐसे रहोगे, तो* ***संप-सुहृदभाव-एकता*** *का सिद्धांत कैसे establish होगा? यह सुन कर उन लोगों को अपनी गलती का एहसास हुआ कि बापा अपनी बीमारी न देख कर इतनी दूर हमारे लिए आए हैं। सो, उन्होंने बापा से माफ़ी माँगी।* ***हम तीनों शब्द एक साथ बोल जाते हैं, पर असल में इनका अर्थ क्या है?*** *इस बार की पत्रिका में* ***गुरुजी*** *ने भी इन तीन शब्दों की easy definition बताई है—*

संप *यानी—साथ में मिलजुल कर एकता से काम करें। जैसे हमारी video team में अक्षरस्वामी, वत्सलस्वामी, पवित्र, चिन्मय, ओम सब मिलजुल कर फंक्शन में वो सेवा करें। संभव है कि*

एक-दूसरे का कोई स्वभाव दिखता हो, लेकिन हम मिलजुल कर करते हैं। **सुहृदभाव** यानी—तुम्हें एक-दूसरे का सह भी लेना है। मानो मैंने कोई idea दिया या दूसरे ने दिया, वो शायद लौकिक रूप से हमें समझ न आए, पर accept कर लेना है। **एकता** यानी— सामने वाले ने यदि गलती की है, तो ये माने कि दरअसल हमने सुहृदभाव से काम नहीं किया होगा, इसलिए महाराज ने वो कराई। तो वो दोष मेरा ही है, उसका नहीं। सामने वाले का दोष अपना मान कर काम करें और उसे ये न बोले कि तेरे कारण काम बिगड़ा। जब हम सत्संग में आते हैं, तो सब green-green लगता है। किसी का दोष नहीं दिखता, लेकिन आगे बढ़ते हैं तो दिखना शुरू हो जाता है।

गुरुजी ने कई बार सत्संग की theory बताई है— paradise got, paradise lost, paradise conquered. सत्संग की शुरुआत में आते हैं, तो सुहृदस्वामी बहुत अच्छे, अक्षरस्वामी बहुत अच्छे, अभिषेक बहुत अच्छा, सारा समाज बढ़िया लगता है। **यहाँ जो भी आता है, वो first word यही कहता है कि यहाँ बहुत शांति है। ये है paradise got. उसे लगता है कि इस काली grill के अंदर पूरी दुनिया ही अलग है। फिर गुरु उसे आगे ले जाते हैं कि अब देख इसकी सच्चाई, तब paradise lost-सब छीन लेंगे। वही मंदिर, वही लोग उसे चुभने लगेंगे। लेकिन, तब न घबरा कर संप-सुहृदभाव-एकता के सिद्धांत से जीतेजी दोबारा conquered कर लेना है। बापा कहते थे कि सुहृदभाव से जियेंगे, तो सत्पुरुष हमें अपनी गोद में बिठायेंगे। भक्तों के साथ सुहृदभाव तो सभी साधनों में श्रेष्ठ है।** यानी जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त होगा, यह उन्हीं योगी बापा ने कहा जिन्होंने 51 पढ़े-लिखे युवकों में गुरुजी को दीक्षा दी। **गुरुजी को यहाँ दिल्ली में हम सबके बीच रहते हुए 58 साल हो गए। दो साल बाद इसकी हीरक जयंती तथा गुरुजी का 90 वाँ प्रागट्य दिन भी मनायेंगे। पिछले साठ वर्ष के उनके परिश्रम व तपस्या का ही यह फल है कि हम सब आज यहाँ बैठे हैं। दिवाली के दिनों में अपने घरों में ताला लगा कर अमदावाद-मुंबई से हरिभक्त आये हैं।** गुरुजी ने इस मंदिर का निर्माण चंदे की पर्चियाँ काट कर नहीं किया। **2011 में मंदिर पर हो रहे पत्थर के काम को देख कर गुरुजी ने कहा था—आशीष, मिलन, अनिलजी, शैलेषभाई सबने जो मिलजुल कर यह किया है, तो इस मंदिर के पत्थर भी बोलेंगे और आते-जाते लोगों को यह मंदिर आत्मीयता से attract करेगा। तो, सुहृदभाव के सिद्धांत पर ही मंदिर निर्माण हुआ है।**

अन्नकूट के उपलक्ष्य में परिसर और कल्पवृक्ष हॉल में इस बार decoration के अलग-अलग symbols लगाए हैं। उसमें माला के अंदर गुरुजी की मूर्ति लगाई है, **Hats off to the idea.**

इसे मैंने तीन तरह से निहारा—

***पहला**—इस भक्त समाज को गुरुजी ने माला में पिरोया है, जिसका केंद्र बिंदु वे स्वयं हैं।*

***दूसरा**—गुरुजी बहुत भजनिक हैं। अपने जीवन में गुरुजी ने जितना भजन किया है, उतना शायद ही पूरे समाज में किसी ने किया हो। उसी की बदौलत आज हम सुखी हैं।*

तीसरा**—कोई भी परिस्थिति हो या दुःख हो, भजन का सहारा न छोड़ें। धुन रामबाण इलाज है। जैसे **'वचनामृत'** और **'स्वामी की बातें'** स्वामिनारायण संप्रदाय और श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के ग्रंथ हैं, गुणातीत समाज में **'सहृदयी'** पुस्तक को भी ग्रंथ बोला जाता है, वैसे ही बापा द्वारा लिखे पत्र को काकाजी ने **'योगी गीता'** के रूप में प्रकाशित कराया, जिसका नित्य पूजा में पठन करते हैं। उसमें बापा ने साधकों के लिए सात मुद्दे-बहुत basic चीज़ें बताई हैं। उसकी **तीसरी बात** में लिखा है—**जागास्वामी कहते थे कि यदि दोष देखने का मन हो, तो अपनी देह, स्वभाव और जाति का देखना, लेकिन एकांतिक भक्त का दोष नहीं देखना। भले ही संत के साथ संबंध हो जाए, पर यदि भक्तों के दोष देखेंगे तो आप ज़ीरो नहीं, बल्कि minus में हो।

*इसी की **छट्ठी बात** में लिखा है—**सुहृदभाव का बड़ा गुण सीखना। एक-दूजे की क्रिया आपस में संप से कर लें वो है सुहृदभाव। एक-दूजे की सेवा कर लेनी, यानी यदि कोई कुछ कह भी दे तो सह लेना और सोचना कि ओहो! कितना सद्भाग्य कि ऐसे कहने वाले मुझे मिले।** बापा ने आज से 80-90 साल पहले यह लिखा था।*

*2019 में **गुरुजी** ने इस बुक में **'मेरी जीवनभावना'** नामक खुद का लिखा एक पत्र add करवाया। उसमें गुरुजी ने लिखा है—पहले कहा जाता था कि धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति जिसमें हो, वो एकांतिक भक्त कहा जाए। बापा ने सूत्र दिया—**'एकता ही एकांतिकभाव'**! जिसे काकाजी ने पकड़ा और जीवनपर्यंत कांतिकाका के साथ कुटुंबभाव और एकता से जीकर, एकांतिकभाव सिद्ध करने का अद्भुत मार्ग-आदर्श स्थापित किया। **अक्षरधाम का सुख तो हमें मिलना ही है, क्योंकि छोटी आयु में ही काकाजी-पप्पाजी ने ख़ुद संकल्प किया था कि उन्हें स्वर्ग धरती पर लाना है। तो, स्वर्ग की बात क्या कि सुहृदभाव से जीता समाज हो, जिसमें न मेरा-तेरा, न अपना-पराया, न अच्छा-बुरा, न गुण-दोष, वाणी में मिठास, सभी का स्वीकार करके सिर्फ़ एक प्रभु की सत्ता मानें! उस गुणातीत तत्त्व को धार के हम जीते हो जाएँ। संबंध वाले मुक्त को सिर का मुकुट मानें। हम सब मानते हैं कि हमारे हृदयाकाश में काकाजी-गुरुजी बैठे ही हैं, प्रगट हैं, पर हमें उन्हें प्रत्यक्ष कर लेना है...***

गुणातीत संत अपने साथ जो ज्ञान का पिटारा लाते हैं, उसमें से 97% वे वैसे का वैसा वापिस ले जाते हैं, क्योंकि उनकी ज़िंदगी हमें सामान्य व्यवहार सिखाने में निकल जाती है। 3-4% जो हमें मिला, उसमें हम पूरा जीवन बिता देते हैं। सुहृदभाव के सिद्धांत को अपनाएंगे, तो उनसे पूरा 100% ले सकते हैं। ***आज सब में वे काम कर ही रहे हैं। सुहृदस्वामी, अक्षरस्वामी, आशीष, अभिषेक सब में वे काम कर ही रहे हैं, तो हम भी सुहृदभाव का सिद्धांत अपनायें और जीतेजी अक्षरधाम का सुख पायें।***

तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई शाह** एवं **पू. ऋषभ नरुला** ने **पू. नित्या दीदी** द्वारा रचित **नया भजन – 'संत स्मृति संग भजो स्वामिनारायण रे...'** प्रस्तुत करके स्वामिनारायण महामंत्र का महिमागान किया। अंत में **प.पू. गुरुजी** ने भक्तों के प्रति अतिशय प्रेम के वश, अपने स्वास्थ्य को नज़रअंदाज करके भी नूतन वर्ष के आरंभ पर निम्न आशीर्वाद देकर निहाल किया – *पहले तो नए साल के जय स्वामिनारायण, सबको नया साल मुबारक हो। जैसे सीता-राम, राधा-कृष्ण, इसी तरह स्वामी और नारायण!* ***नए साल के अंदर भगवान और संत की ये युगल उपासना भीतर में दृढ़ करके, हमेशा दोहराते हुए हम सत्संग और जगत के हर क्रियायोग करते रहें, यही आज के दिन ठहराव करना है।*** *हम यह करते तो हैं, लेकिन कई मौकों पर भूल जाते हैं और फिर भगवान और संत के प्रति (धोका-वांधा) विश्वासघात करने लग जाते हैं। पर, हमसे यह न हो।* ***भगवान और संत को हमेशा साथ में रख कर, हमें मिली दिव्य विभूतियों के प्रति अखंड दिव्यभाव रखते हुए हम सुहृदभाव से इस सत्संग में चलते रहें और दूसरों को भी अग्रसर रखें*** *यही आज के दिन प्रार्थना और आशीर्वाद।*

इसके बाद प.पू. गुरुजी के साथ सभी संत, सेवक एवं हरिभक्त कल्पवृक्ष हॉल में गए। जहाँ 'ग्वाल, बाल, लाल जमे मदन गोपाल...' और 'लेता जाओ रे सांवरिया बीड़ी पानन की...' इत्यादि थाल गाकर अंतर के भाव से श्री ठाकुरजी को भोग लगाया और फिर अन्नकूट की महाआरती संपन्न हुई। प्रति वर्ष प.पू. गुरुजी पीछे पंडाल में आकर सर्वप्रथम दोने में कढ़ी, चावल और मिलीजुली सब्जी का प्रसाद लेते हैं। अबकी बार उनकी तबियत को ध्यान में रखते हुए, श्री ठाकुरजी के समक्ष रखे डोंगों में से पू. सुहृदस्वामीजी ने प.पू. गुरुजी को दोने में प्रसाद अर्पण किया। फिर सबने यह महाप्रसाद लिया। दोपहर 4:00 बजे के उपरांत श्री ठाकुरजी को भोग लगाए गए व्यंजनों को भक्तों में वितरित किया। कुछ बहनें व भाभियाँ अन्नकूट के बर्तन माँजने की और कुछ प्रसाद के डिब्बे बनाने की सेवा में रत हो गईं। रात्रि करीब 8:30 बजे सेवाओं से निवृत्त होकर सबने प्रस्थान किया।

प.पू. गुरुजी ने अस्वस्थता ग्रहण करके सभी साधकों-मुक्तों को **'नाभि का भजन'** करने के लिए प्रेरित तो किया ही, पर साथ-साथ गुणातीत समाज की आपसी एकता-अपनत्व का दर्शन कराया। प.पू. गुरुजी जब अस्पताल में थे, तब **संतभगवंत साहेबजी** लंदन थे। वहीं से उन्होंने निश्चय कर लिया था कि भारत पहुँच कर वे प.पू. गुरुजी से मिलने के लिए दिल्ली मंदिर अवश्य जाएँगे। स्वाभाविक है कि **जैसे प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों के प्राणाधार हैं, वैसे ही गुणातीत समाज के प्रत्येक केन्द्र के मुक्त अपने सभी त्यौहार अपने प्रगट प्रभु के सान्निध्य में ही संपन्न करने की इच्छा रखते हैं।** अतः ब्रह्मज्योति में दीपोत्सव कार्यक्रम संपन्न होने के पश्चात् **3 नवंबर 2025** की सायं दिल्ली airport से **प.पू. गुरुजी** के लिए बनवाई गई vanity van **'हंस'** में विराजमान होकर **संतभगवंत साहेबजी** मंदिर पधारे। नूतन वर्ष में यह उनका प्रथम शुभागमन था, सो **'आंगण उत्सव बनी आवो साहेबजी...'** भजन की मधुर ध्वनि के साथ दीप प्रज्वलित करके संतों, मुक्तों, बहनों ने तालियों की गड़गड़ाहट और प्रणाम करके स्वागत किया। उस दौरान प.पू. गुरुजी भी जेतलपुर में बिराजे थे, अतः lift से संतभगवंत साहेबजी वहाँ गए और दोनों ने एक-दूजे को नमन किया। संतभगवंत साहेबजी के संग अनुपम मिशन से **पू. पीटरभाई, पू. पुनीतभाई, पू. जिम्मीभाई, पू. ज्योति बहन पोपट, पू. डॉ. अमी बहन पटेल** आए।

4 नवंबर की सुबह संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में धुन का लाभ मिला। सायं 7:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में संतभगवंत साहेबजी व प.पू. गुरुजी की निश्रा में नव वर्ष स्वागत सभा हुई। जिसमें धुन-भजन के पश्चात् **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीष वर्षा की—

...गुरुजी हम दिल्ली वासियों और गुणातीत समाज को स्वामिनारायण भगवान, योगीजी महाराज से मिली हुई बहुत अद्‌भुत भेंट हैं। योगीजी महाराज कहते थे—महंतस्वामी और संत लोग मेरी 60 वर्ष की तपश्चर्या का फल हैं। महंतस्वामी के सान्निध्य में जो 51 सुशिक्षित युवाओं ने दीक्षा ली, वो योगी महाराज का बहुत बड़ा संकल्प था। इस योजना के लिए दादू काका को select किया...

बापा को सब अच्छे साधु के रूप में मानते थे। दरअसल वे सबकी बातें सुनते थे, सब जैसा कहते वैसा करते थे, सबको हेत-प्रेम से बुलाते थे और खुद सबकी सेवा करते थे। इसलिए सबको उनके प्रति प्रेम था कि एक अच्छे साधु हैं। लेकिन वे स्वयं प्रभु का स्वरूप हैं, उसका ख्याल तब पड़ा, ***जब काकाजी को समाधि के द्वारा साक्षात्कार हुआ और उन्होंने योगी महाराज का माहात्म्य प्रसराया...***

गुणातीतभाव में रहने वाले साधु का एक ही काम है कि उनके संबंध में जो कोई आए उन सबको प्रभु में जोड़ना और प्रभु राज़ी हों, ऐसी समझदारी उनके दिल में स्थापित करना। *सौराष्ट्र में ऐसे साधु गुणातीतानंदस्वामी के पास बहुत बड़ा मंदिर था। एक बड़े आश्रम के पीठाधीश-मंडलेश्वर ने गुणातीतानंदस्वामी के बारे में बहुत सुना था, तो वे उनके दर्शन के लिए आए और उनके साथ बैठ कर बातचीत करते-करते प्रश्न किया—आप संस्कृत पढ़े हुए हैं? गुणातीतानंदस्वामी ने कहा—नहीं। उन्होंने पूछा—आप श्रीमद्भगवतगीता की कथा करते हैं? स्वामी बोले— नहीं, वो भी नहीं। यूँ सब चीज़ों के लिए मना करते रहे। फिर उन्होंने पूछा—तो, आपको क्या आता है? पूरे सौराष्ट्र के भक्त लोग आपको प्रभु के रूप में मान कर पूजते हैं, तो आप क्या करते हो कि सबको इतना भाव है? तब गुणातीतानंदस्वामी प्रत्युतर दिया—छोटा बालक कीचड़ में खेल-कूद कर कपड़े मैले कर लेता है और खुद भी गंदा हो जाता है। पर, उसकी माँ ऐसा देख कर उसे स्नान करा कर अच्छे कपड़े पहना कर उसके पिता के हाथ में देती है। फिर पिता उसको खिलाता है, बस वही काम हमें आता है।*

जगत रूपी माया में जो मानव हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध आदि दोष से पीड़ित और दुःखी होते हैं, उससे सबको मुक्त करके हम प्रभु के चरणों में उनको रख देते हैं, यही हमको आता है। गुणातीत साधु का यही काम है। *ऐश्वर्य, प्रताप, रिद्धि-सिद्धि, चमत्कार दिखाने वाले साधु-संत तो मिलेंगे, लेकिन गुणातीत साधु का कार्य यह है कि हमारे भीतर में अहंकार जैसे देह के भाव से जो हठ, मान, ईर्ष्या और काम क्रोध आदि दोष उत्पन्न होते हैं, उनमें से वे हमें मुक्त करके प्रभु के सान्निध्य, उनकी स्मृति और प्रसन्नता का आनंद दिलवाते हैं। पर, ऐसे साधु को पहचानना बहुत मुश्किल है। योगी महाराज की पहचान दादू काका ने कराई।* ***दादू काका ने जोरशोर से योगी महाराज का प्रभु के रूप में माहात्म्य बढ़ाया। तभी तो युवा लड़के बापा के हेत प्रेम में फनां होकर साधु हुए...***

साधु द्वारा हमको प्रभु मिले हैं, जो इसी देह में प्रभु का सुख देना चाहते हैं। इसलिए वे विविध प्रकार के प्रयोग कराते हैं, उत्सव कराते हैं, जन्म दिवस मनाते हैं, दार्जलिंग-लुधियाना ले जाते हैं, चौक में बैठ कर आनंद कराते हैं और बीमारी भी ग्रहण करते हैं, यह भी उनका एक प्रकार है। उनकी बीमारी जीवों के उत्थान के लिए होती है...

गुरुजी आनंद स्वरूप हैं और उसके साथ-साथ वे हमारी समझ को pure करते हैं। किस तरह की निष्ठा होनी चाहिए, किस तरह साधु से जुड़ जाना, उनकी आज्ञा में रहना और संप,

सुहृदभाव, एकता से निर्दोषभाव युक्त सेवा करना सिखाते हैं। *पर, इतने जन्मों के जो पाश लगे हैं, उसके वश हम वर्त जाते हैं।* ***योगीजी महाराज*** *एक दृष्टांत देते थे—*

एक राजा शहर में घूमने निकला, तो एक सुंदर लड़की पर उसकी दृष्टि पड़ गई और ऐसा हो गया कि मुझे उसके साथ शादी करनी है। पर, वो भीख माँग कर अपना गुज़ारा करती थी। गुजरात में उसे वाघरन बोलते हैं। तो, उसका नसीब खुल गया और राजा के साथ शादी करके रानी बन गई। लेकिन क्या हुआ कि रानी बनने के बाद उसका वज़न कम होने लगा। राजा को चिंता हुई, तो वैद्य-हकीम सबको दिखा कर उपचार शुरू किया। 6 महीने के बाद भी किसी के उपचार का उस पर असर नहीं हुआ। वो एकदम लकड़ी जैसी कमज़ोर हो गई। फिर राजा ने दीवान से कहा कि आप क्या करते हो? कुछ ध्यान नहीं रखते हो? तब दीवान ने पता लगवाया कि वो लड़की कौन थी? तब उसे पता चला कि वो तो मांग-मांग के खाने वाली भिखारन थी। जबकि राजमहल में तो दास-दासियाँ सोने की थाली में खाना परोसते और dining hall में बैठ कर खाना पड़ता। पर, ऐसे खाना उसे अच्छा नहीं लगता था। तो, दीवान ने एक कमरे में अलग-अलग जगह आले बनवाए और भोजन के समय दाल, चावल, सब्जी तरह-तरह के व्यंजन रखते। फिर उसे वहाँ अकेला छोड़ देते। वह थाली लेकर आले के सामने खड़े रह कर बोलती—हे गंगा मैया, आपके घर में जो कुछ बचा-खुचा जूठा है, हमको दे दो। फिर उसमें से लेकर नीचे पालथी मारकर वह खाना खाती। 6 महीने में तो वो तंदुरुस्त हो गई। राजा ने कहा— दीवान आपने ऐसा क्या किया कि रानी अच्छी हो गई। फिर दीवान ने राजा को दिखाया कि वह कैसे खाना खाती है। यह देख कर राजा क्रोधित हुआ कि इसे एहसास नहीं है कि वह राज रानी है, फिर भी अपना भिखारीपन छोड़ा नहीं, उसमें ही डूबी हुई है। तो, उसने उसे राजमहल के बाहर निकाल दिया। गुजराती भजन की पंक्ति है— तारा संकल्पे हमें आटले आव्या, मस्त तारी मूर्तिए हेवा मुकाव्या। तो, हम सब वो भिखारिन जैसे ही थे, जो पूर्व जन्म का कुछ-कुछ साथ लेकर आए हैं। उसे छोड़ने के लिए कोई विशेष उपाय नहीं करना है, ***बस गुरुजी की मस्त मूर्ति में निमग्न रहें और उनकी आज्ञा से संप, सुहृदभाव और एकता रखकर हिल-मिलकर जीयें। लेकिन, अभी कुछ-कुछ छोड़ने के लिए तैयार नहीं होंगे, इसलिए वो छुड़वाने के लिए वे ऐसा ग्रहण करते हैं।*** *यहाँ हॉल में लिखा है—* ***आप यहाँ आए हो ना? अब बेफिक्र हो जाओ*** *और दूसरा लिखा है—* ***कठिनाइयों में हम अपनी सोच छोड़कर प्रभु को ही उपायभूत होने दो। धुन हर समस्या को हल करेगी ही।***

एक समस्या या दो समस्या के लिए नहीं कहा, बल्कि कोई भी समस्या के लिए कहा है। वो चाहे देह, मन, धन, कुटुंब या आत्मा की हो, तो धुन हर समस्या को हल करेगी ही। कितना आसान है, स्वामिनारायण स्वामिनारायण...

वालिया भील के बारे में हम सब जानते हैं कि निकम्मा आदमी था। मार-धाड़, खून-खराबे और मांस-मदिरा से भरपूर था। लेकिन जब नारदजी गुरु के रूप में मिल गए और उन्होंने कहा कि तू ये क्या कर रहा है? कितने जन्म लेकर तुझे भुगतना पड़ेगा... उसे बात समझ आई तो पूछा कि क्या करूँ? नारदजी ने कहा—पेड़ के आस-पास राम-राम बोल कर धुन लगाना और कुछ समय बाद मैं आऊंगा। पाँच साल के बाद जब नारदजी आए, तो उसकी दाढ़ी-जटा बढ़ गई थी और राम-राम बोलते-बोलते रुपांतर हो गया और ***वालिया भील में से वाल्मीकि ऋषि बन गए, जिन्होंने रामायण की रचना की। तो, क्या साधना की? सिर्फ मंत्र जाप करते रहे। ऐसे ही जोबन वड़ताला जब स्वामिनारायण भगवान के संबंध में आया और उनकी आज्ञा में रहा, तो लुटेरे में से परम एकांतिक हो गया। भगवान स्वामिनारायण का वही परब्रह्म तत्त्व गुरुजी के रूप हमें मिला है। देह की उम्र होती है जो दिखाई पड़ती है, पर उनकी स्मृति करके हम भजन ही किया करें। याद रखना वे स्वतंत्र नहीं, भक्त के अधीन हैं...*** *भजन करते हुए संकल्प करो कि अब उनकी तरफ दृष्टि, उन्हें ही राज़ी करने का भाव बढ़ता जाए और संप, सुहृदभाव व एकता से काम करना है।*

गुरुजी से हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी स्मृति में रहेंगे-हिल मिलकर रहेंगे, लेकिन आप आनंद में रहो बस हमें यही चाहिए। आपका आनंद वही सबका आनंद है... अभिषेक, विश्वास, आशीष और नक्षत्र सभी के लिए तालियाँ बजाकर सम्मान दें कि गुरुजी के साथ ही बैठे रहते हैं। खाना-पीना सब छोड़कर तपश्चर्या करते हैं... ओ.पी. अग्रवालजी chartered accountant हैं, लेकिन उन्हें गुरुजी ने कहा कि मुंबई नहीं जाना, इधर ही रहो, तो वो रुक गए। शाबाश-धन्यवाद अग्रवालजी तुम्हारा पूरा जीवन धन्य हो गया। आप सब जो सेवा कर रहे हैं, उससे स्वामिनारायण भगवान, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी, महंतस्वामी कितने खुश-राज़ी होते होंगे। *तो, बस गुरुजी के सान्निध्य में आनंद करो, उन्हें कुछ होने वाला नहीं। लेकिन भजन करना और उनसे कहना कि* ***हम में कुछ कमी है तो डाँट दो, पर आप स्वस्थ रहो...***

शास्त्रीजी महाराज का संकल्प था कि दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति युक्त मंदिर बनाना। वही संकल्प काकाजी ने गुरुजी के द्वारा पूर्ण किया और भगवान विराजमान हुए। उत्तर भारत

में एक समाज भी तैयार हो गया। गुरुजी की तबीयत बहुत अच्छी है। बस गुरुजी के लिए प्रार्थना करते रहना। गुरुजी, आप सब पर राज़ी रहना, आशीर्वाद बरसाते रहना और ***आपकी शताब्दी मनानी है, ऐसा करना...***

तत्पश्चात् **पू. पीटरभाई** ने स्वामिनारायण महामंत्र एवं प्रगट संत के सान्निध्य का उल्लेख करते हुए प्रार्थना की और फिर अनुपम मिशन से जुड़े अमेरिका के प्रख्यात व्यापारी **पू. आत्मदयालजी** एवं भारतीय अभिनेता, नाटककार और पटकथा लेखक **पू. राहुल सिंहजी** ने सभा में संबोधन किया। अनुपम मिशन के मुक्तों ने प.पू. गुरुजी के लिए काजू, बादाम और चॉकलेट का विशिष्ट हार बना कर भेजा था। **पू. पीटरभाई** एवं संतभगवंत साहेबजी से घनिष्ठता से जुड़े कोलकत्ता के **पू. अनुपमभाई** ने **प.पू. गुरुजी** को यह हार अर्पण किया। **संतभगवंत साहेबजी** को सबकी ओर से नमन करते हुए पू. **डॉ. कैलाश सिंहजी** तथा **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने पुष्प हार अर्पण किया। तदोपरांत **पू. पुनीत गोयलजी** ने अनुपम मिशन के **संतों** एवं **गणमान्य अतिथियों** का तथा **पू. बाती दीदी** ने **पू. ज्योति बहन पोपट**, **पू. डॉ. अमी बहन पटेल**, **पू. आशा रावतजी** का पुष्प गुच्छ से अभिवादन किया। **पू. डॉ. कैलाश सिंहजी** की आत्मीयताभरी चिकित्सा सेवाओं के प्रति नतमस्तक होते हुए, **पू. पुनीत गोयलजी** ने उन्हें संतभगवंत साहेबजी की प्रसादी का हार पहना कर सबकी ओर से अभिनंदन किया। विसर्जन प्रार्थना से समापन हुआ।

5 नवंबर की सुबह कल्पवृक्ष हॉल में संतभगवंत साहेबजी विराजमान हुए। इस दिन **पू. राकेशभाई शाह का जन्मदिन था, सो उन्होंने संतभगवंत साहेबजी का कंकु से पूजन किया।** तब **संतभगवंत साहेबजी** ने भी उनके पूरे कपाल पर पंक्तिबद्ध तिलक करते हुए कहा— ***काकाजी ऐसा करते थे...*** ऐसी अनेरी स्मृति देने के बाद दिल्ली के कुछ स्थानिक एवं पंजाब से आए मुक्तों के साथ **संतभगवंत साहेबजी** ने निम्न ज्ञान गोष्ठी करके सबको सूझ दी कि **प.पू. गुरुजी ने अस्वस्थता क्यों ग्रहण की**—

सौराष्ट्र में कई गाँव ऐसे हैं, जहाँ municipality के पानी को कपड़े से छानें तो भी impurities नहीं निकलतीं। वह पानी पीने के लिए अच्छा नहीं है। इसलिए लोग शाम को 10-15 मटकों में पानी भर कर, उन सब में alum-फिटकरी का टुकड़ा डाल कर सो जाते हैं। सुबह जब उठते हैं, तो कचरे के elements नीचे बैठे होते हैं और pure water ऊपर रह जाता है। फिर फिटकरी को निकाल कर पानी गरम करके पीते हैं। देखो, उन्हें कुछ करना नहीं पड़ा, सिर्फ alum का टुकड़ा अंदर रख दिया, तो soluble elements बाहर निकल गए। इसी तरह हमें कुछ करना नहीं है। ***सिर्फ गुरुजी की स्मृति में रहना है और निकम्मे elements बाहर निकल जाएँगे।***

उनकी स्मृति में रहना ही हमारी साधना है और हम उनकी स्मृति में रहें, इसलिए ऐसे बीमारी ग्रहण करते हैं। हम सबकी दृष्टि गुरुजी की ओर रहे कि गुरुजी क्या करते हैं? उनकी तबीयत अच्छी हो गई होगी? वे दर्शन देने के लिए बैठे होंगे? वर्ना तो सोचेंगे कि गुरुजी तो बैठे ही होंगे। पर नहीं, लगातार-चौबीस घंटे हमारी वृत्ति हमारे गुरु के चरणों में रहती हो जाए, तब हमारे भीतर में सब बदल जाएगा। ये कराने के लिए ऐसा ग्रहण करते हैं। *हमारी भक्ति यही है कि धुन करते हुए प्रार्थना-संकल्प करें कि हम आपकी मूर्ति में रहेंगे, भजन करेंगे, संप, सुहृदभाव, एकता से हम सब काम करेंगे, मिलजुल कर रहेंगे, तो उनका स्वास्थ्य अच्छा हो जाएगा। शास्त्रीजी महाराज कहते थे कि हम अपनी इच्छा से बुखार ग्रहण करते हैं और अपनी इच्छा से छोड़ देते हैं।*

गुरुजी के स्वास्थ्य के लिए prayer concentration form में करना। *सामान्य ढंग से किसी से कहें कि दौड़ो, तो साधारण रीति से दौड़ेगा। पर, यदि तुम्हारे पीछे कुत्ता पड़ जाए, तो fullest capacity से कैसी तीव्रता से दौड़ते हैं। ऐसे ही प्रसंग बनने पर तीव्रता से धुन होती है, तो वही गुरुजी को कराना है। आप सबको भी धन्यवाद पंजाब में रहते हुए भी गुरुजी का काम कर रहे हो...*

मुक्तों को अनुपम दृष्टि प्रदान करने के उपरांत संतभगवंत साहेबजी चिदाकाश हॉल में प.पू. गुरुजी के पास आए। यहाँ उन्होंने गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति कराते हुए प.पू. गुरुजी के पूरे ललाट पर चंदन से तिलक किए। तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई** ने **प.पू. आनंदी दीदी** से प्रेरित होकर **संतभगवंत साहेबजी** से प्रश्न किया—

आपने कल (4 नवंबर की सायं सभा) कहा था कि मुक्तों की कसर टालने के लिए संत इस प्रकार बीमारी ग्रहण करते हैं। तो, हमारी ऐसी क्या कसर है वह आप कृपा करके बताएँ और हम उसे किस प्रकार टाल सकें?

तब करुणामय **संतभगवंत साहेबजी** ने प्रगट प्रभु और उनके संबंध वाले मुक्तों को निहारने का निम्न दृष्टिकोण बताते हुए आशीष दी—

बापा से किसी ने प्रश्न किया कि हमारी कौन-सी कसर है? बापा बोले—महिमा समझने की कसर है। *महाराज-भगवान संत द्वारा जब मानव रूप में विचरते थे, तो उनके अंदर मनुष्यभाव आ जाता था। जैसे बापा के प्रति मनुष्यभाव आता था कि* ***इतना ठीक करते हैं और इतना ठीक नहीं करते। जबकि वे जो करते हैं, वो अनंत जीवों के भले के लिए करते हैं। ऐसा विचार चौबीस घंटे, बारहों मास और जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्था में रहे, तब माहात्म्य की कसर टले***

और वो गुणातीतभाव प्राप्त हो।

काम-क्रोधादिक दोष कोई कसर नहीं है। *गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है—काम-क्रोधादिक दोष तो मूली के चोर जैसे हैं। बाड़ी में मूली लगाई हो और उसे कोई चोर खींच कर ले जाए, तो उसे पकड़ कर दो थप्पड़ मार के छोड़ दोगे। वैसे ही काम क्रोधादिक दोष का कुछ नहीं करना। फिर किसी ने पूछा—तो, फिर चोर कौन? तो,* ***संत के प्रति भाव में जो फ़र्क़-अभाव दिलवाते हैं वो चोर हैं। काम-क्रोधादिक दोष तो देह-physical body के हैं। जब physical body छोड़ देंगे, तो अग्निसंस्कार विधि में जल जाएँगे, साथ में carry forward नहीं होंगे। पर, आत्मा के दोष carry forward होते हैं। प्रत्यक्ष भगवान के स्वरूप में मनुष्यभाव, भावफेर और भगवान के भक्तों का अभाव लेना आत्मा के दोष कहे जाएँ। ये चीज़ें आत्मा से चिपकी रहती हैं। तो, दूसरे जन्म में भी आपको भावफेर होगा...***

प्रत्यक्ष स्वरूप-सत्पुरुष के साथ रहते हुए unknowingly हमें कई बार ऐसा होता है कि ये बराबर-ठीक नहीं हुआ या नहीं बरता। उनकी किसी क्रिया में हमें मायिकभाव-मनुष्यभाव आता है, तो वो कसर टलवाने के लिए संत जीव की वृत्ति अपने में खींच लेते हैं। ऐसे Purification से कसर टल जाती है। उनकी और संबंध वाले भक्तों की महिमा सांगोपांग होने से कसर टल जाती है। सत्पुरुष के अंदर सम्यक् निर्दोषभाव हो, लेकिन भक्तों में न हो तो फिर वो भी महिमा की कसर कही जाए। ये सब बारीक-बारीक कसर कही जाएँ। तो, ये टालने के लिए ऐसा भजन करना कि सब दिव्य हैं, दिव्य हैं, दिव्य हैं। गुरुजी के साथ जुड़े हुए सभी दिव्य हैं। *गुरुजी की आज्ञा के अनुरूप सेवा, कथावार्ता से महिमा बढ़ती जाएगी। मन से निर्दोष मानेंगे, वचन से गुणगान व महिमा गाएँगे और कर्म यानी देह से सेवा करेंगे, तो भगवान की प्रसन्नता मिलेगी और वो प्रसन्नता कसर टाल देगी।*

महाराज ने कहा है—गुणातीतानंदस्वामी भगवान का धाम हैं और सबको गुणातीत करना है। उन्हें हम सबको सामान्य भक्त नहीं बनाना, उनके जैसे-उनके रूप बनाना है। इसलिए ये सब कसनी वे ख़ुद ले रहे हैं... बस उनकी ओर देखा करना। आप सब कृपापात्र हो, तो अत्यंत कृपा करके ज़रा भी कसर रहने नहीं देंगे।

यूँ दो दिन दिल्ली के मुक्तों को आध्यात्मिक भोजन द्वारा बल प्रदान करके संतभगवंत साहेबजी ने दोपहर साढ़े बारह बजे के करीब दिल्ली Airport के लिए प्रस्थान किया। अमदावाद पहुँचने के उपरांत सीधा अनुपम मिशन के केन्द्र में अन्नकूटोत्सव में सबको दर्शन देने पहुँचे। यहाँ भी उन्होंने सभी संतों-हरिभक्तों से प.पू. गुरुजी के निरामय स्वास्थ्य हेतु विशिष्ट धुन

करवाई। गुणातीत संत तो देहातीत होते हैं, परंतु मनुष्य तन धारण किया है, सो उसकी मर्यादा में भी रहते हैं। **संतभगवंत साहेबजी भी 85 वर्षीय हैं, लेकिन प.पू. गुरुजी और उनका सखाभाव का कैसा अप्रतिम संबंध है कि देह के भाव आड़े नहीं आते।**

भगवान स्वामिनारायण के स्मृति प्रसंग के अनुरूप कई वर्षों से प्रबोधिनी एकादशी के दिन **शाकोत्सव-हाट** का आयोजन करवा कर प.पू. गुरुजी अपनी सन्निधि में भक्तों को आनंद कराते हैं। इस बार 2 नवंबर को प्रबोधिनी एकादशी आई, परंतु प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य को देखते हुए तब स्थगित करके **5 नवंबर-देव दीवाली** के मंगलकारी दिन यह उत्सव मनाना तय किया। अतः सुबह संतभगवंत साहेबजी के प्रस्थान के पश्चात् सेवकगण सायं आरंभ होने वाले शाकोत्सव की सजावट-तैयारियों में जोरशोर से लग गए। सायं 7:00 बजे के करीब प.पू. गुरुजी ने इसका उद्घाटन किया। सब्जी मंडी का रूप धारण किए इस परिसर के मध्य में छोटा मंदिर बनाया था, जहाँ पंडित के रूप में बैठे **पू. लक्ष्मी शुक्लाजी** एवं **पू. आनंद शुक्लाजी** दर्शन करने आते मुक्तों को टीका करके प्रसाद दे रहे थे। उसी के नज़दीक प.पू. गुरुजी, संतों एवं सेवकों के बैठने का स्थान बनाया था। सो, सभी stalls पर रखी सब्जियों को अपनी दृष्टि से प्रसादी का करके प.पू. गुरुजी सबको दर्शन देने के लिए सोफे पर विराजमान हो गए। तत्पश्चात् सब्जियाँ, व्यंजन, चाय-कॉफी इत्यादि खरीद कर भक्तगण खाते-पीते हुए जिस प्रकार एक-दूसरे से मिल रहे थे; छोटे बच्चे या बड़े भी ऊंट की सवारी कर रहे थे और मदारी बंदर का तमाशा दिखा रहा था, उससे ऐसा प्रतीत होता था कि मानो श्रीजी महाराज के तत्कालीन समय में सब पहुँच गए हों। रात्रि 9:30 बजे यूँ किल्लोल करके सबने अपने गंतव्य स्थान पर प्रस्थान किया।

शाकोत्सव के लिए उपयोग किए गए सामान को अभी समेट ही रहे थे कि एक शुभ समाचार मिला कि **14 से 16 नवंबर** अनुपम मिशन से संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से **सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा** के साथ **पू. उत्पलभाई** एवं **पू. अर्पितभाई** तथा पवई मंदिर से **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई,** **पू. अश्विनभाई** के साथ **पू. डॉ. महेन्द्र मर्चंट, पू. मितेशभाई** तथा **पू. हर्षितभाई** श्री ठाकुरजी एवं प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ दिल्ली मंदिर पधार रहे हैं। नवंबर मास तो मानो उत्सवों की श्रृंखला से भर गया और सही मायने में तो श्रीजी महाराज ने प.पू. गुरुजी द्वारा धारण किए गए अकल्पनीय रोग के सदमे में से मुक्तों को उबारने के लिए सबको प्रेरित किया।

14 नवंबर की सायं दीपों से प्रकाशित मंदिर के प्रांगण में **सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा** ने संतों के साथ प्रवेश किया। **चिदाकाश हॉल में आते ही श्री ठाकुरजी के दर्शन करके 84 वर्षीय**

सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा ने प.पू. गुरुजी को सादर दंडवत् प्रणाम करके, अपनी साधुता का दर्शन कराते हुए साधकों को सीख दी कि जो हमारे बड़े हैं या हम जिन्हें अपना बड़ा मानते हैं, उन्हें आदर-सम्मान देने में अपनी आयु या ओहदे का तनिक भी आभास नहीं होना चाहिए। करीब बीस मिनिट के पश्चात् ही प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई भी मुक्तों के साथ प्रविष्ट हुए। प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में थोड़ी देर बैठ कर, सब प्रसाद लेने के लिए प्रसादम् हॉल में गए और देर रात होने के कारण विश्राम में गए। 15 नवंबर-उत्पत्ति एकादशी के पावन दिन कल्पवृक्ष हॉल में श्री ठाकुरजी के समक्ष पू. मैत्रीशीलस्वामीजी द्वारा की जाती महापूजा में प.पू. अश्विन दादा, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई (पवई) एवं अन्य सभी सम्मिलित हुए। तत्पश्चात् चिदाकाश हॉल में प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में धुन हुई।

सायं 7:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में सत्संग सभा का आयोजन था। **पू. राकेशभाई शाह,** अनुपम मिशन के संत **पू. उत्पलभाई, पू. ऋषभ नरूला, पू. सेवक विश्वास** इत्यादि ने निरंतर भजन प्रस्तुत करके सबको प्रभु की मूर्ति की स्मृति से भर दिया। भजन के पश्चात् **गुणातीत स्वरूपों** ने दिल्ली मंदिर से जुड़े सत्संग समाज को आध्यात्मिक सूझ देते हुए निम्न आशीर्वाद प्रदान करके निहाल किया—

प.पू. वशीभाई

...कल यहाँ आकर गुरुजी से मिले तो उन्होंने स्वस्थ और आनंद वाला दर्शन कराया। उसके लिए उन्हें धन्यवाद। वर्तमान समय की दुनिया में uncertainty, complexity, ambiguity के संजोगों की वजह से सत्संग द्वारा सबको perpetuality देना, यानी eternality permanence देना एक बड़ा challenge है। CA लोग जानते होंगे कि किसी भी organisation को CA को एक perpetuality certificate भी देना पड़ता है कि भई ये company कल कहीं भाग नहीं जाएगी, it will remain. तो, ***करोड़ों धन्यवाद महाराज को कि जिन्होंने पृथ्वी पर आकर हमें वो eternality बख़्शीश दी। उन्होंने कहा कि दूसरों के जन्म कार्यकारण से हुए, पर मेरा प्राकट्य जीवों का कल्याण करने, ब्रह्मरूप करने, एकांतिक धर्म सिद्ध कराने के लिए हुआ है। इसलिए अपने साथ गुणातीतानंदस्वामी को लाए। करोड़ों धन्यवाद शास्त्रीजी महाराज को जिन्होंने उस तत्त्व की पहचान करवाने के लिए खूब सहन करके 'अक्षरपुरुषोत्तम' सिद्धांत बताया और करोड़ों धन्यवाद बापा को कि 3 फरवरी को काकाजी को साक्षात्कार करा कर यह बात पूरे समाज-पूरी दुनिया के सामने स्पष्ट की कि जीवन में सबसे सुखी होने का उपाय यह है कि भगवान धारक प्रगट सत्पुरुष जब पृथ्वी पर विचरण करते हों, तो उनके साथ संबंध दृढ़ कर***

लो। तब तुम्हें दुनिया की कोई problem, complexity, ambiguity रहेगी नहीं। ये सब जीवन में रहेंगे, पर तुम्हें बाधित नहीं करेंगे।

काकाजी जो 'मुक्ताक्षरपुरुषोत्तम' की जय बुलवाते उसका तात्पर्य यह था कि ऐसे सत्पुरुषों-संतों-भक्तों द्वारा भगवान पृथ्वी पर प्रगट हैं। सामान्य life में पैसे को highest perpetuality समझा जाता है। ***स्वामी की एक बात है कि घर में बहुत पैसा, बंदूक और बख्तर है, तो तुम्हें किसी से डर नहीं है, you are secured. पर, महाराज ने आज यहाँ गुरुजी के रूप में हमें सबसे बड़ी security भेंट दी है। उसमें भी साहेबजी ने एक बड़ी security ये दे दी कि गुरुजी की मूर्ति मंदिर में स्थापित कर दी।*** *तुम मूर्ति के पास आकर कुछ भी बोलो, तो वो सबसे बड़ी भेंट-eternality दे दी। पृथ्वी पर ब्रह्मरूप होकर शांति पाने का महाराज का एक बड़ा-powerful कार्यक्रम है, जो हम अपने सामने देख सकते हैं। इस बार नए साल के कार्ड में गुरुजी, दिनकर अंकल और भरतभाई की ओर से संदेश में काकाजी की बात लिखी थी कि करोड़ों जन्म से हमारे अंदर चिपके हुए अज्ञान और अविद्या के कारण हमें ऐसे स्वरूपों की पहचान नहीं होती।* ***हमें जितनी अपनी consciousness है कि मैं वशी-मैं राकेश हूँ, उतनी प्रभु की consciousness नहीं है। उस मूल अज्ञान को टालने के लिए ऐसे स्वरूपों की भेंट दी है।*** *आज की दुनिया में ये हक़ीक़त है कि युवा वर्ग को peer pressure, financial pressure है। Social media-social revolution के कारण backup रखने का सब problem है। पर, उन सबका solution महाराज ने ये सत्संग दिया है।* ***सत् यानी सत्पुरुष, उनका संग means सत्संग। जब ऐसे सत्पुरुष के contact में आते हैं, तब हमारा देहभाव टल जाता है और उनका भाव भीतर आ जाता है और वो भाव दृढ़ हो जाता है, तो automatically आपकी eternality perpetuality हो जाती है।*** *तो, हमको जो सबसे बड़ी भेंट मिली है, उसे हम समझें, प्राप्त करें और अपनायें। उसके लिए* ***साहेब ने नए साल के संदेश में एक simple चीज़ लिखी है कि भजन करते हुए क्रिया करनी। पर, यदि उस बात को हम पकड़ेंगे नहीं, अपने जीवन में लागू नहीं करेंगे, तो वो 'बात' in pen and paper ही रह जायेगी और यदि उसे पकड़ कर हमने implement किया, तो ब्रह्मरूप होने की हमारी journey पूरी होगी।*** *वो सेवक-दास होने की, एक obedient servant-दास का दास बनने की journey है।*

इन स्वरूपों ने यह चीज़ कितनी आसान बताई है—

पहला— *हमें सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान और उनके धारक संत मिले। कई वचनामृत में*

simple बताया है कि कल्याण का मार्ग, कल्याण का उपाय तो प्रगट भगवान और प्रगट संत का आसरा है, जो हमें free में मिला। आप कहाँ ढूँढने गए थे? कहाँ तप, ध्यान या कोटि जप करने गए थे? लेकिन सामने से मिले, तो journey का ये पहला step है।

दूसरा— *Humility हमारी journey को fast बनाती है। आज गुरुजी, अश्विनदादा ख़ुद के वर्तन से humility सिखाते हैं। अभी गुरुजी को पता चला कि आज भक्त पंकज रियाज़ का birthday है, तो उन्होंने सेवक को बुला कर पूछा कि इसे आज की कुछ स्मृति भेंट दी? विश्वास ने बताया कि पहले ही आपने दे दी। At this age, his health and physical condition भी... पर ये imbibe हो गया है।*

तीसरा— *काकाजी-पप्पाजी का principle था कि भगवान भजती बहनें यदि डॉक्टर, CA या Lawyer हैं, तो संसार में सेवाएँ करते हुए भगवद्भाव प्राप्त करें। ऐसे ही गुरुजी का creation देखो कि* ***अक्षरज्योति में भगवान भजती बहन डॉ. अर्ची के clinic*** *पर आज अश्विन दादा के साथ हम गए। तो, वहाँ vibrations बहुत positive हैं। This is humility of* ***अश्विनदादा*** *कि उसे आशीर्वाद में लिखा—**गुरुजी ने आप को ऐसा संत तैयार किया है कि आपके द्वारा कोई भी treatment लेगा उसका दाँत तो अच्छा हो ही जाएगा, पर कल्याण भी होगा और आपकी चेतना भी अच्छी हो जाएगी।** अश्विन दादा ने last में मेरा, भरतभाई और अश्विनकाका का नाम लिखा, पर ख़ुद का नाम ही नहीं लिखा। जब उन्होंने हमें कहा कि sign करो, तब हमने देखा। फिर हमने कहा कि पहले आप sign करो, आपने ये आशीर्वाद दिए हैं। See the height of humilty. In the joy of others lies my own. He gives credit to others. Appreciate करना-its the highest form of humility. यह third step है कि भक्तों का गुणगान करो। गुणगान गाना 'दास के दास' का लक्षण है।* ***गुरुजी बहुत बार बोलते हैं कि झुक कर हाथ जोड़ना बहुत अच्छा है, लेकिन आंतरिक विनम्रता आपकी जीवनशैली बन जाए।***

Clinic से मंदिर आए, तो अश्विन दादा ने कहा कि काकाजी की प्रसादी के जामुन वृक्ष का दर्शन करना है। वहाँ धुन करके दादा ने माथा टेका। फिर सबको समाधि स्थान पर लेकर गए, वहाँ भी दर्शन-धुन की। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि perpetuality की हमारी journey यह है कि मैं देह नहीं, आत्मा हूँ। यह उनके बोलने में नहीं है, बल्कि reality में है कि 84 वर्षीय अश्विन दादा ने दोपहर को खाना खाने के बाद आराम करना छोड़ कर, भक्तों की सेवा में ख़ुद को लगाया। It is the highest form of perpetuality. अभी सभा में आए, तो हमारे पैर छुए

और फिर सोफे पर बैठे, जबकि हमें उनके पैर छूने हैं। यह उनकी humility का highest level है। जब इस level पर पहुँचेंगे, तो **जैसे अभी भजन में गाया कि भगवान को आप में बसने का मन हो, then you become the address of God. They live such a life that they do not exist and God exist through them. भगवान को अखंड धार कर वे विचरते हैं...**

पप्पाजी गुरुजी को मूर्ति का लूटेरा कहते थे कि जो भी आता है, उसे राज़ी कर लेते हैं... गुणातीतानंदस्वामी ने पहले प्रकरण की पहली बात में कहा है कि भगवान और साधु की महिमा की बातें निरंतर करनी और सुननी। **So mahima is like a powerhouse... वो हम जितना समझेंगे, सेवा, सत्कर्म, समागम करेंगे, it will create so much positivity in you कि आप जहाँ जाओगे, वहाँ से negativity भाग जाएगी।** आप office में entry करोगे, तो negativity भाग जाएगी। **हमें ऐसे स्वरुप मिले हैं कि हमें ऐसा बना देंगे कि हम जहाँ पुकारेंगे, वहाँ भगवान प्रगट हो जाएँगे।**

जिसको तेरा भरोसा, जिसको तेरा सहारा। मझदार क्या करेगा, मझदार ही किनारा।।

हम यहाँ आते हैं, तो हमारा base भरोसा है। **काकाजी कहते थे indomitable faith. गुरुजी यहाँ दिल्ली में आए तो कुछ नहीं था, पर उनके पास भजन का बल, काकाजी का सहारा-भरोसा था। तो, कितना बड़ा physically तो सब बड़ा हुआ ही, पर भगवान और संत-गुरुजी के होकर जीने वाले 400-500 भक्त भी तैयार हो गए...** सब भक्तों को धन्यवाद कि गुरुजी को राज़ी करने के लिए जीवन जीते हो। हम america थे, जब गुरुजी की तबीयत की news आई। मैंने दिनकर दादा को बोला कि करोड़ों धन्यवाद हैं अभिषेक, विश्वास, आशीष, डॉक्टर दिव्यांग, डॉ. अर्ची वगैरह को कि immediately अस्पताल ले गए। In life certain moments are very difficult, पर right time पर to rush to the hospital. सही समय पर treatment हो जाना और फिर भगवान की कृपा तो है ही। भगवान ने हमारे लिए गुरुजी को कितना अच्छा और fast recovery दे दी, उसके लिए काकाजी को thank you और उनसे प्रार्थना कि गुरुजी की तबियत अच्छी रखें। **आप लोग गुरुजी का जो ध्यान रखते हो, वो देख कर अश्विन दादा बहुत खुश होते हैं और उसमें divinity भी है। आज हम डॉक्टर अर्ची के clinic गए, तो आनंदी दीदी ने प्रमुखस्वामी महाराज के लिए रचित भजन 'सकल दिव्य दिव्यं' सुनवाया कि सेवकों की कितनी कसौटी होती है कि 'हाँ' बोलना होता है, तब गुरु 'न' कहते हैं, जब**

'न' कहना हो, तब 'हाँ' कहते हैं। रात हो तो कहेंगे दिन है, दिन है तो कहेंगे रात है। यूँ वे दिव्य हैं, दिव्य हैं, दिव्य हैं।

काकाजी कहते थे कि सच्चे पुरुष या भगवान मिलना मुश्किल, मिले तो पहचानना मुश्किल, पहचाने तो साथ रहना मुश्किल, साथ रहे तो अखंड दिव्यभाव रखना मुश्किल। वो आप गुरुजी के प्रति रखते हो, तो आप phd के exam में हो, ये बहुत बड़ी बात है। अश्विन दादा ने शांति से वो भजन सुना। अर्पित भाई भी ख़ुश हुए, क्योंकि साहेब भी ऐसी लीला करते हैं। अभी पप्पाजी के function में गए थे, तो ब्रह्मज्योति ठहरे थे। रात को पौने बारह बजे साहेब बोले—चलो, coffee पीयेंगे और मठिया खाएँगे। इतना आनंद कराया कि हम भूल गए कि बारह बजे हैं। ***हमारा भाग्य है कि गुरुजी, साहेब, दिनकरभाई, भरतभाई इतने बड़े हमें मिले हैं।*** *अभी महंतस्वामी 'प्राप्ति के विचार' शीर्षक में बात करते हैं कि सबसे ऊँचे स्वरूप हमें प्राप्त हुए हैं। तो, महाराज और स्वामी के चरणों में प्रार्थना कि ऐसी भव्य प्राप्ति हुई है, तो हम उस प्राप्ति के कैफ़ में अखंड रहें और सबको रखें, ऐसी सेवा हम करें-ऐसे आशीर्वाद गुरुजी दें। उनकी तबीयत बहुत अच्छी रहे, यही प्रार्थना।*

प.पू. भरतभाई

जब से गुरुजी की तबीयत के बारे में सुना, तब से इच्छा थी कि जल्दी से गुरुजी से मिलें। ***जब भी दिल्ली आते हैं, तो गुरुजी कहाँ नहीं है वो देखना मुश्किल है। हर एक कण-कण में हरेक जगह, हरेक में गुरुजी हैं। गुरुजी हमारे साथ अखंड है और वो कभी हम से बिछड़ ही नहीं सकते... गुरुजी के हृदय में एक ही भाव है कि मैं किस तरह से काकाजी की सेवा करूँ! कोई भी भक्त छोटा से छोटा आता है, तो गुरुजी के दिल में ऐसा होता है कि उन्हें कैसे राज़ी करूँ...***

हमें ये गुणातीत संत इतना-इतना कह रहे हैं कि हमारा सद्भाग्य है कि हमें जो प्राप्ति हुई है वो अद्भुत है, उससे हम धन्य हो गए हैं। फिर भी हम घर जाकर रोते हैं कि अरे, हमारा क्या होगा? ये होगा कि नहीं होगा? उसके बजाय ***हर एक कार्य करने से पहले ग्यारह बार स्वामिनारायण बोलें। दूसरी बातों से जुड़ने के बजाय हम हमेशा प्रभु से जुड़े रहें।***

स्वामिनारायण भगवान के समय पर एक भक्त उनके पास एक सप्ताह सत्संग करने आया कि मुझे आपका लाभ लेना है। महाराज ने उससे कहा कि कोई कहीं भी जाने के लिए कहे, पर तू इधर ही रहना कहीं जाना नहीं। थोड़े समय बाद एक भक्त ने उसे अपने घर चलने के लिए कहा, पर उसने मना किया मुझे यहीं रहना है। पर, उसने इतना आग्रह किया कि अभी महाराज आराम में जाएँगे, तब दो घंटे में घर होकर आ जाना। देखो, महाराज ने उसे कहीं भी जाने के

लिए मना किया था। भगवान और संत पहले से ही हमें कुसंग के बारे में बता देते हैं। खूब आग्रह करने पर वह उसके साथ गया और महाराज जब आराम में से जागे तो उसके बारे में पूछा। किसी ने बताया कि वह फलां के साथ गया है, तो महाराज बोले—वो गया, गया, गया। उसे ऐसा कुसंग लगा कि वापिस आया ही नहीं। जबकि सात दिन महाराज के पास रहने वाला था। कहने का तात्पर्य यह है कि ***हमें ऐसे गुणातीत संतों का जो संग मिला है, तो उनके प्रति negative भाव की बातों को न पकड़ें, positive बातें ही पकड़ें...***

साहेब कहते हैं कि भगवान हितकारी हैं; क्योंकि उन्हें हमसे लगाव-हेत है, इसलिए वे कभी हमारा बुरा कर नहीं सकते। ऐसा मान कर उनके साथ अपना संबंध बढ़ायें। दिव्यभाव, महिमा, अहोभाव और निर्दोषबुद्धि का जितना संबंध बढ़ायेंगे उतनी शक्ति मिलेगी और वो निर्दोषभाव और दिव्यभाव हमेशा हमारा बना रहे।

जब विमुख प्रकरण हुआ, तो काकाजी को सांत्वना देने के लिए राजकोट से एक भाई flight से ताड़देव मंदिर आए। पर, उन्होंने देखा कि काकाजी तो मस्ती से बातें कर रहे हैं कि बापा साक्षात् प्रभु का स्वरूप हैं, वे हमारे साथ ही हैं। वे अलग हो ही नहीं सकते, वो हमारी सब प्रार्थना सुनते हैं। ऐसी बातें सुन कर आख़िरी वाले कमरे में आकर हरिभाई साहब से बोले—मेरा पैसा बेकार गया, मैं यहाँ क्यों आया? काकाजी को क्या सांत्वना दें, उसके बदले वे ही हमको बल दे रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ***प्रगट प्रभु का ऐसा माहात्म्य-महिमा हमारे जीव में बैठे कि वो हमसे कभी दूर हो ही नहीं सकते, हमारे साथ ही हैं...***

आज गुरुजी के स्वास्थ्य के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि उनका स्वास्थ्य हमेशा अच्छा ही रहे। हंसा दीदी के प्राकट्य पर्व पर साहेब आए थे, तो वे बोले कि आप 108 साल जियो। खूब आग्रह करते हुए दीदी बोलीं—हमारे साथ आप भी जीना। तो साहब बोले—हाँ-हाँ मैं भी रहूँगा। ये गुणातीत संत हमारे साथ हमेशा हैं ही, मगर हम चिंता करते हैं कि क्या होगा, कैसे होगा? ***...ये सब सेवकों को बहुत धन्यवाद देता हूँ कि गुरुजी की इतनी अच्छी care करते हैं, उसके लिए really appreciate करते हैं...*** सभी भक्त भी ऐसा जीवन जीते हैं कि गुरुजी कैसे राज़ी हो जाएँ... तो, हम आपको कभी भी विवश न करें। आप राज़ी हों ऐसा हमारा हर पल का जीवन बना रहे... सुहृदस्वामी, सेवकों, बहनों, सभी भक्तों को धन्यवाद। ***सेवक 'ताजी सलाम' की तरह हमेशा तैयार रहते हैं... गुणातीत स्वरूपों के पास हम ऐसे ही जीवन जियेंगे, तो उनकी प्रसन्नता के पात्र हम जल्दी बन जाएँगे...***

सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा

गुरुजी की इतनी अच्छी तबियत देख कर अत्यंत आनंद हुआ और उनके आशीष पाकर बहुत धन्यता महसूस हुई। साहेब की आज्ञा और कृपा से हमें यहाँ गुरुजी के दर्शन और विशेषतः साहेब जिनकी बात करते थकते नहीं, ऐसे सब संतों, सेवकों, बहनों के दर्शन करने का अद्भुत लाभ प्राप्त हुआ है...

माहात्म्य का बहुत बड़ा power है और अपने सत्संग में इसकी प्रमुखता भी है, पर कुसंग उसमें सेंध लगाता है। गुणातीतानंदस्वामी ने बाह्य और आंतरिक दो प्रकार के कुसंग की बात की है। बापा की कृपा से हमारा पूरा गुणातीत समाज काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब, गुरुजी के मार्गदर्शन मुताबिक़ इतना तो आगे बढ़ा है कि हमें बाहर का कुसंग छूता नहीं। लेकिन अपने अंदर का कुसंग हमें आड़े आता है और उसके उपाय के लिए साहेब ने विक्रम संवत् 2082 के नूतन वर्ष के संदेश में जो कहा है, वो दोहराता हूँ—भजन करते-करते क्रिया करेंगे, तो अंतर में ठंडक रहेगी। अंतर ठंडा रहना यानी सतत माहात्म्य से भरा-भरा रहे और माहात्म्य के बिना ठंडक प्राप्त नहीं होती। *साहेब कहते हैं कि भगवान और उनके भक्तों के गुण गाने व सुनने से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है।* ***ब्रह्मरूप होना यानी क्या? तो, अंतर में ठंडक रहे और सबके प्रति शुभ संकल्प हों।*** *इस हॉल में बहुत सुंदर सूत्र लिखा है—कठिनाइयों में हम अपनी सोच छोड़ कर... कठिनाइयाँ कई तरह की होती हैं। पर जब अपना मन और उसके साथ जुड़ा दिल कबूल न करे तो वो बड़े से बड़ी कठिनाई है। इसलिए अंतर ठंडा और शुभ संकल्प उठते नहीं। पर, गुरुजी ने उसके लिए अच्छा उपाय बताया है।* ***कठिनाइयों में हम अपनी सोच छोड़ कर प्रभु को ही उपायभूत होने दें।*** *प्रभु को उपायभूत कैसे होने देना? तो,* ***धुन हर समस्या को हल कर देगी ही...*** *लेकिन, अंतर ठंडा रहता नहीं इसलिए अपने पर प्रसन्नता बरसती नहीं और डगमगा जाते हैं। सो, कर्ता-हर्ता का भाव रखें कि वो ही कर रहे हैं-करवा रहे हैं।* ***भगवान के भक्तों के प्रति निर्दोषबुद्धि और दिव्यभाव जब खंडित हो, तो स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्मरण करना-धुन करनी। हमें पहले दिन से ही काकाजी महाराज ने सिखाया कि बैठो, धुन करो।*** *पाँच मिनट का कह कर कब आधा घंटे तक खींच लेते, वो हमें पता नहीं चलता था। इस तरह हम उनके साथ ज़बरदस्ती बैठ कर भी धुन करना सीखे...*

ऐसी मान्यता दृढ़ करें कि दास के दुश्मन हरि कभी हो नहीं सकते। जैसा करते होंगे, ठीक ही करते होंगे। यदि मैं ऐसा नहीं मान पाता, तो मेरे शिष्यभाव, सेवकभाव और दासत्वभाव में कमी है... *प्रभु-गुरु हैं, हमारा हित और मंगल ही चाहते हैं। इसलिए हम अपनी उपास्य मूर्ति*

को इष्टदेव कहते हैं, जो हमेशा हमारा भला, अच्छा और मंगल चाहते हैं। ***बापा भी कहते—भगवान सबका भला करो। उन्होंने ऐसी कोई conditions नहीं रखी कि मेरी कंठी बाँधे, मेरा सेवक बने, मेरा भजन करे, मेरी आज्ञा पाले उनका भला हो। जीव प्राणी मात्र का अच्छा, मंगल और कल्याण सोचने वाले ये पुरुष प्रगट हुए हैं...***

गुण-अवगुण शुभ-अशुभ कुछ भी देखे बिना उनका हेत और कृपा वो हम पर लगातार बरसाते रहते हैं। ***हम गुरुजी से क्या प्रेम करते हैं? गुरुजी ने अब तक हमें मात्र और मात्र प्रेम ही दिया है, प्यार किया है। क्योंकि उन्होंने हमें काकाजी स्वरूप ही देखा है। उनका और काकाजी का नाता, प्रेम-संबंध का शब्दों से वर्णन नहीं कर सकते। हमारे जैसे जो उम्र, अनुभव, आध्यात्मिक स्थिति में और हर तरह से छोटे हैं, फिर भी वे मुझसे जो प्रेम करते हैं, वो केवल और केवल काकाजी की दृष्टि से देखते हैं। यानी प्रभु की दृष्टि से देखते हैं। थोड़ा आगे कहें तो साहेब के साथ हमारे संबंध को देखते हैं। ये उनका बहुत बड़प्पन है।*** *हम तो एक ही प्रार्थना करें कि उनके स्वरूप में हमें कभी भी मनुष्यभाव न आए और दिन प्रतिदिन दिव्यभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जाए। तब उनके संबंध वाले मुक्तों की हम महिमा समझ पाएंगे। वर्ना उतना ही उनके स्वरुप को समझने में, यानी उनकी महिमा समझने में कमी है...*

हम आपस में एक-दूजे का महिमा समझें और जो कोई सेवा करने का हमें मौक़ा मिले, तो मुक्तों के स्वभाव-प्रकृति, पसंद-नापसंद कुछ भी देखे बिना उनका गुरुजी के साथ या जो कोई प्रगट गुरुहरि हैं, उनके साथ का संबंध देखकर, उसमें संपूर्ण निर्दोषभाव रख कर, दिव्यभाव से उनकी मन, कर्म और वचन से सेवा कर लेंगे, तो बड़े पुरुष की तो हम पर प्रसन्नता थी और है ही...

गुरुजी से प्रार्थना करते हैं कि उन्होंने जो ऐसी अनहद और अकारण कृपा हम पर बरसायी है, उसका मोल और माहात्म्य समझें। उसका अपने द्वारा विस्तार करें, वो गुरुजी की सच्ची पूजा, प्रार्थना है और हम गुरुजी के हैं वो माना जाए। *दिल्ली से लौट कर साहेब लगातार, यहाँ सभी स्वरूपों के प्रति की* ***सर्वदेशीयता*** *की बात करते हैं। मैं सेवकों से बात कर रहा था... सालों पहले गुणातीत ज्योत-पप्पाजी से जुड़े लालजी मामा कोटेचा यात्रा में दिल्ली आए थे और धाम में गए। तब उनकी सब क्रिया और व्यवस्था गुरुजी ने कराई। तब* ***पप्पाजी बोले थे— मुझे दौड़ कर दिल्ली आना पड़ता, उसके बदले मुकुंद ने सब संभाल लिया। ये बात हम समझें, सीखें, पकड़ें...***

सत्संग यानी क्या? तो, गुणातीतानंदस्वामी ने छोटी-सी बात कह दी कि बड़े पुरुष के पास दो हाथ जोड़ना और वे जो कहें वो करना, उसका नाम सत्संग है। तो, ***हम जहाँ हैं वहाँ परम***

तत्त्व को धारण किए हुए स्वरूप के अंदर संपूर्ण निर्दोषभाव और दिव्यभाव रख कर दो हाथ जोड़ कर जीवनभर सत्संग करते रहें...

संतभगवंत साहेबजी के आगमन के तुरंत बाद ही नूतन वर्ष में इन स्वरूपों के पधारने से सबका हृदय आह्लादित हो रहा था। सो, सबकी ओर से अभिवादन करते हुए **पू. राकेशभाई शाह** ने **प.पू. गुरुजी** को, **पू. वत्सलस्वरूपस्वामी** ने **प.पू. अश्विन दादा** को, **पू. विजय शर्मा** ने **प.पू. भरतभाई** को तथा **पू. समीरभाई दवे** ने **प.पू. वशीभाई** को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। अंत में विसर्जन प्रार्थना से सभा का समापन हुआ।

16 नवंबर की दोपहर 12:00 बजे मोगरी-अनुपम मिशन जाने के लिए प.पू. अश्विन दादा संत भाइयों के साथ Airport के लिए रवाना हुए और सायं 4:00 बजे प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई एवं मुक्त मुंबई जाने के लिए रवाना हुए।

गुणातीत संतों की किसी भी क्रिया के पीछे कोई न कोई प्रयोजन होता है। **प.पू. गुरुजी द्वारा यूँ अस्वस्थता ग्रहण करने से सबको बृहद गुणातीत समाज के स्वरूपलक्षी सुहृदभाव, अपनेपन और कुटुंबभाव का सहज दर्शन हुआ।** क्योंकि अनुपम मिशन और पवई से आए स्वरूपों-मुक्तों को दिल्ली मंदिर से प्रस्थान किए दो ही दिन हुए थे और संदेश मिला कि **19 नवंबर** की देर रात्रि को **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** **यानी उनके रूप में सांगोपांग विचरते ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी अपनी प्रसन्नता के पात्र 'मुकुंदस्वामी' से मिलने के लिए संतों-सेवकों सहित दिल्ली मंदिर पधार रहे हैं।** मंदिर के संतगण, सेवकों, बहनों और हरिभक्तों को आशीर्वाद प्राप्ति का एक और अवसर प्राप्त हो रहा था। देर रात्रि को प.पू. गुरुजी आराम में थे, इसलिए **20 नवंबर** की सुबह नित्य पूजा के पश्चात् प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी द्वारा प्रेमभाव से बनाया प्रसाद ग्रहण किया। तत्पश्चात् वे 'जेतलपुर' में प.पू. गुरुजी के साथ काफ़ी देर बैठे।

सायं 7:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में स्वरूपों के दर्शन-समागम के लिए सब एकत्र हुए। स्वामिनारायण महामंत्र धुन करने के बाद हरिधाम से पधारे **पू. बापास्वामी और पू. भक्तिप्रियस्वामी** द्वारा अंतर के भाव से भजन प्रस्तुति के पश्चात् **पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी** ने प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के प्रति कृतार्थभाव व्यक्त करते हुए आशीष याचना की। तत्पश्चात् **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** से भी सबने नूतन वर्ष के आरंभ में निम्न आशीर्वाद प्राप्त किया—

नए साल में गुरुजी के दर्शन करने थे... ***गुरुजी हम सबके लिए ध्याननीय-सेवनीय स्वरूप हैं।***

पर, हम साधक या सेवक मार खा जाते हैं कि वे हमारी तरह ही बरतते हैं। स्वरूप को बीमारी नहीं होती, लेकिन उनके प्रति हमारा जो दिव्यभाव है वो सम्यक् दृढ़ हो और हमारी आंतरिक आत्मीयता-सुहृदभाव खूब बढ़े उसके लिए ही बड़े पुरुष चरित्र ग्रहण करते हैं। *महाराज ने तो वचनामृत प्रथम 27 में कहा है कि संत के द्वारा भगवान देखते हैं, उनके कान से भगवान सुनते हैं। ब्रह्मांड के समग्र जीव प्राणी मात्र के इंद्रिय अंतःकरण को positive बना कर समग्र रूप से भगवान में जोड़ सकें, ऐसी उनकी सामर्थ्य है। बड़े पुरुष सच में हम सबको आगे ले जाने के लिए ही बीमारी ग्रहण करते हैं। पप्पाजी ने बीमारी ग्रहण की थी, तब Germany के Manfred जिन्हें हम मणिभाई कहते हैं, उन्होंने* ***स्वामीजी*** *से प्रश्न पूछा—* ***गुणातीत पुरुष तो इन सब से परे हैं, उन्हें कुछ होता नहीं है। तो फिर पप्पाजी को ये बीमारी क्यों आई? स्वामीजी ने जो बढ़िया बात की उसे मैं गुरुजी ने अभी जो बीमारी ग्रहण की, उस पर लगाता हूँ कि हम सब इनके साथ हेत और प्रीति से जुड़े हैं और उनके प्रति निर्दोषबुद्धि है। पर, ये निर्दोषबुद्धि हेत से है, समझदारी से नहीं है। समझदारी वाली निर्दोषबुद्धि में entry करवाने के लिए बड़े पुरुष ऐसे चरित्र ग्रहण करते हैं।*** *बाकी हमें तो कई प्रसंग पता हैं कि उन्होंने हमारे लिए संकल्प किया हो और हर प्रकार की बीमारी टल गई हो। देह की बीमारी तो सामान्य है, पर साधु होकर हिमालय में जाकर कठिन और कठोर तपश्चर्या करें, देह तिरस्कार कर दें, तो भी मन की बीमारी जाती नहीं। लेकिन, ये संत संकल्प करें तो टल जाती है। मन में रहे हुए हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा और अहंकार चले जाएँगे ही। तो, सत्पुरुष को देह की बीमारी कैसे हो सकती है? फिर भी है, हाथ पकड़ कर खड़ा करना पड़ता है, उन्हें याद करवाना पड़ता है। इसका कारण यही है कि हमारी उनके प्रति जो निर्दोषबुद्धि है, वो प्रेम के वश न रह कर अब समझदारी से हो। ये सदा दिव्य साकार स्वरूप हैं,* ***सबको अपने जैसा सुखी करने के लिए, अपने स्वरूप में डुबाने के लिए, हमारी भजन की तीव्रता बढ़ाने के लिए बड़े पुरुष ऐसे कोई चरित्र करते हैं।*** *हमें मिलकर रोज़ ऐसी प्रार्थना करनी है।*

स्वामीजी *कहते थे कि मैं तो आणंद विद्यानगर में पढ़ता था, तब बापा के योग में आने के बाद काकाजी की बातें सुनकर एक बात पकड़ी कि बड़े पुरुष दिव्य हैं और उनके संबंध वाले उतने ही दिव्य हैं, रत्तीभर भी कम नहीं। उस बात को साकार करने के लिए हम विद्यानगर साइकिल पर जाते, तो pedal मारते-मारते रटते थे कि हे बापा तू दिव्य, तेरे संबंध वाले सब दिव्य, तू दिव्य, तेरे सब दिव्य। ऐसे हमें भजन करना है। तो जैसे कि काकाजी कहते थे, तो उनके प्रति का मनुष्यभाव और मायिकभाव टलेगा, वर्ना नहीं टलेगा। साधु हो जाएँगे, कितनी भी सेवा*

कर लें तो भी नहीं टलेगा। सो, जाग्रत रहकर यूँ भजन प्रार्थना किया करें और उनका पसंदीदा करने की आदत डालें। उसके अलावा और कुछ करने का मन ही न हो। ***गुरुजी को अपनापन-कुटुंबभाव कितना पसंद है! उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता कुटुंबभाव, आत्मीयता और सुहृदभाव है। वे सबके सुहृद हैं, किसी व्यक्ति को कुछ पसंद हो तो वे यहाँ से वहाँ तक भी भिजवायेंगे। वे सोचेंगे नहीं कि वो कौन है-किसका है, वो उन्होंने कभी नहीं सोचा। मैं इस बात का साक्षी हूँ, सुहृदभाव उनकी विशेषता है।*** *तो, बड़े पुरुषों के जीवन में हम डूबे रहें और उसके लिए प्रार्थना किया करें कि हे महाराज हमको आप ऐसा बना दो। हमें ऐसे जीना है, आप बल दो, बल दो, बल दो। आप दिव्य हैं, आपके संबंध वाले सब दिव्य हैं, दिव्य हैं, दिव्य हैं। इस बात को चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते हर एक क्रिया करते हुए रटो। यदि उनका मनन-चिंतन रटन होगा तो उन्हें हमसे जो करवाना है, वो तभी ही होगा वर्ना नहीं। महाराज ने वचनामृत मध्य 37 में कहा है कि कैसा भी ज्ञानी होगा, फिर भी वह प्रकृति मुताबिक़ आचरण करता ही है। पर, ऐसी बात पकड़ कर यदि हम लग पड़ेंगे, तो परिणाम ये आयेगा कि हम जहाँ भूल करेंगे या नहीं भी की होगी, तो मुक्त में रह कर प्रगट होंगे...* ***गुरुजी हमें सब के बीच में टोकें, डाँटें, झाड़ें तो हमें मन में ऐसा हो कि हम पर अधिकार किया, हमारी पात्रता की घड़ाई हो रही है।*** *यदि उनके अल्प संबंध वाले भी हमें यदि ऐसा कहे, तो विचार करना कि हमने मांगा है इसलिए महाराज ऐसे प्रसंग खड़े करते ही हैं और उस समय हमारा दिव्यभाव और निर्दोषबुद्धि टिके रहें।*

शास्त्रीजी महाराज *सारंगपुर पधारे थे। सब संत-भक्त एकदम नज़दीक से उनके दर्शन का सुख ले रहे थे। जबकि बापा दूर खड़े-खड़े हाथ जोड़ कर कंपकपाते हुए दर्शन कर रहे थे। हका खाचर ने पूछा—जोगी तुम क्यों दूर से दर्शन कर रहे हो? नज़दीक आओ न।* ***बापा*** *तब कुछ बोले नहीं, पर बाद में बताया—बापू,* ***मैं तो स्वामी से प्रार्थना कर रहा था कि आपके दर्शन पाकर हम न्याल-तृप्त हो गए, हृदय में ठंडक हो गई। पर, गलती से भी आपके अल्प संबंधी का अपराध हो गया हो, उनका दोष दिख गया हो तो माफ़ करना मैं ऐसी प्रार्थना कर रहा था।*** *वे हमें सिखा रहे थे। साहेब ने कहा न कि जो कुछ भी होगा, वो भजन-प्रार्थना से ही होगा। इसलिए हम सबको खूब भजन करना और उसमें यही प्रार्थना किया करना कि हमसे इतना करवा लेना, रटते रहना, माँगते रहना। लौकिकता से सोचें कि छोटा बच्चा अपने माँ-बाप के साथ बाज़ार गया हो और किसी दुकान पर कोई चीज़ अच्छी लग जाए, तो naturally हठ*

पकड़ेगा, रूठ जाएगा। आख़िर माँ-बाप को वो दिलवाना ही पड़ता है। जबकि ये तो प्रभुधारक पुरुष हैं, तो हम अंदर से प्रार्थना किया करें। पर, 'आरंभे शूरा' की भांति करते हैं, फिर जैसे-जैसे दिन जाते हैं वैसे वैसे सब ढीला हो जाता है। मगर एक सरीखे विश्वास के साथ यदि हम लगे रहें, तो अपने जीवन में ज़रूर साकार होगा।

हमें श्रद्धा, विश्वास और कैसे भजन करना चाहिए, उसके बारे में ***स्वामीजी*** *का एक प्रसंग है। बापा मुंबई में थे, तब उन्होंने भक्तों से कहा कि गोंडल के लिए गद्दे बनाये हैं, उनके cover बनवाने हैं। स्वामीजी और महंतस्वामी तब युवक थे। बापा ने चरित्र ग्रहण किया था कि कोई भी चीज़ हो, उसे गोंडल भेजो। प्रभुदासभाई को बुलाकर उन्होंने कहा कि ये सब थान गोंडल ले जाने हैं। स्वामीजी ने कहा कि transport में रख दें, तो पहुँच जाएँगे। बापा बोले—नहीं, आप ख़ुद देने जाओ। इसलिए वे और अन्य युवक गोंडल लेकर गए। बापा ने 'अक्षर मंदिर' गोंडल कोठारीस्वामी को पत्र लिखा कि इस तरह युवक यहाँ से थान लेकर निकलेंगे, तो स्टेशन पर घोड़ागाड़ी लेकर जाना। थान के लगभग 86 पोटले हुए और विरमगाम से ट्रेन बदल कर जब गोंडल स्टेशन पहुँचे, तो वहाँ कोई आया नहीं था। ख़ुद घोड़ागाड़ी करके वे मंदिर पहुँचे और सारा सामान उतारा। सामने guest house की सीढ़ी पर दो संत और चार सेवक बातें-गप्पें लगा रहे थे। स्वामीजी बोले कि मुझे विचार आया कि क्यों इन लोगों को इतना ख्याल नहीं आया कि बापा ने कहा था फिर भी कोई स्टेशन आया नहीं? पर,* ***मेरा यह मानना है कि स्वामीजी को तो विचार नहीं आया होगा, लेकिन हमें ऐसे विचार आते हैं इसलिए अपने ऊपर लेकर उन्होंने यह बात की। स्वामीजी ने बताया कि ऐसा विचार करने के बाद मैंने ढाई घंटे परिक्रमा-स्वाध्याय-भजन किया। इसलिए साहेब भजन पर ज़ोर देते हैं।*** *कहने का तात्पर्य यह है कि प्रसंग तो छोटे-बड़े बनेंगे। पर, जैसे पापड़ तोड़ें तो कितनी आवाज़ आएगी? ऐसे ही प्रसंग छोटे-बड़े पटाखों की तरह आवाज़ करेंगे, पर यदि इस तरह से* ***स्वाध्याय-भजन करेंगे तो ज़रूर समझ पाएँगे कि देह है तो बीमारी आएगी ही। पर ये तो देहातीत हैं, ग्रहण करते हैं। यह बात हमें समझ आ जाएगी, मानी जाएगी और काकाजी जो कराना चाहते थे, उसमें हमें ज़रूर निमित्त बनायेंगे।*** *इसके अलावा बीमारी ग्रहण करने का मुझे कोई कारण दिखता नहीं।* ***स्वामीजी ने भी ऐसी भयंकर बीमारी ग्रहण की थी। तब मैंने स्वामीजी की हाज़री में गोष्टि करते हुए प्रार्थना की थी कि हम सबकी आत्मीयता तो है ही, पर बौद्धिक आत्मीयता है। संबंध वाली नहीं, व्यावहारिक है कि रखनी चाहिए इसलिए रखते हैं। संबंध वाली हो, तो उसमें*** *Discrimination* ***नहीं होता। जिसे काकाजी कहते—अभेददृष्टि और अविरोधवृत्ति। इसका मतलब कि***

Discrimination ***बिल्कुल नहीं। सब संबंध वाले उनके लिए प्रभु के स्वरूप ही होते हैं। ऐसी भावना, ऐसी दृष्टि देने के लिए ही बड़े पुरुष-गुरुजी कुछ न कुछ चरित्र ग्रहण करते हैं। सब मिलकर रोज़ यही भजन करें कि छोटे-बड़े प्रसंग बनें, तब अपना दोष देखकर पीछे हठ करें, बुद्धि न लगायें।*** *कई बार क्या होता है कि कोई प्रसंग बनता है तो विचार करने बैठ जाते हैं कि इसने ये किया-ये हुआ, इसलिए गुरुजी ने यूँ कहा। अरे भई, ऐसा कुछ नहीं होता है। उस* ***बुद्धि को प्रभु के स्वरूप में जोड़ दें, यानी भजन करें कि ये प्रसंग मेरे प्रकाश में आया है, मेरा दोष दिखाओ। केवल स्वामिनारायण मंत्रजाप नहीं करना। यह संस्कार उदित करेगा, पर हृदय नहीं बदलेगा। गुरुजी जैसे संत की स्मृति के साथ करेंगे, तो पक्का अपना दिल हमेशा पुलकित-आनंद से भरा रहेगा। कभी भी कहीं कंटाला नहीं आयेगा, सिर्फ़ यहाँ नहीं बल्कि जहाँ भी तुम्हें रखें। साहेब ने कहा है कि ये सबसे आसान मार्ग है कि समझदारी पूर्वक भजन करें।*** ***स्वामीजी*** *कहते थे—*

पहला*—हम बापा के संबंध में आए, तो हमने कुछ किया नहीं और उन्होंने हमें अपने जैसे सुखी कर दिया।*

उनसे पूछा कि फिर क्या किया? उन्होंने बताया कि गुणातीत स्वरूपों के जीवन में सराबोर रहे, हमें भी ये करना है कि वे कैसे जीते-बोलते हैं? उनका कैसा हलन-चलन और भक्तों के साथ उनका कैसा वर्तन-प्यार है।

दूसरा*—हमने केवल बापा की पसंद का करने की ठाना और लगे रहे। बापा को क्या पसंद था? वचनामृत गढडा प्रथम 16 और 18... उसमें बड़े पुरुष बिल्कुल compromise नहीं करते, कहते नहीं हैं, पर उसमें tolerate नहीं करते, इसलिए उस ओर नज़र रखें। साथ ही बापा को संप, सुहृदभाव, एकता पसंद थी। तो इन दो चीज़ों को नज़र में रखकर लगे रहें-प्रार्थना करें।*

तीसरा*—बापा की रीत से जीना। उनकी रीति दासत्व और संबंध वाली दृष्टि थी। उस वक्त बापा को युवा प्रवृत्ति पसंद थी। वो करने में हमने हाथ-पैर मारे, तो बापा राज़ी हो गए। बस इतना ही करना है, बहुत आसान रास्ता है। हम उसे चबा कर चिकना और मुश्किल बना देते हैं।*

गुरुजी को क्या पसंद है वो हम सब जानते हैं, तो वैसा जियें-उनमें डूबे रहें। *कई बार ऐसा विचार आता है कि वो तो बोलते रहते हैं, ऐसा नहीं होता। पर, वे जो बोलते हैं उसके पीछे रहस्य-कोई कारण होता है। आप लोग उनकी आज्ञा को सामान्य नहीं ही मानते हो, सब जी ही रहे हो। पर, उनका वचन मानने में कभी कोई ऐसी कसर हो, तो वो अपनी टल जाए।* ***गुरुजी ग्रहण की हुई बीमारी में से जल्द से जल्द निकल कर अच्छे स्वास्थ्य के साथ सबको दर्शन दें,***

हे गुरुजी इतनी प्रार्थना स्वीकारना। हम सब आपके भुल्के (बालक) हैं। आपके आसरे यहाँ जीते हैं। आपकी लीला हमें समझ आए या न आए, पर हमारी नज़र केवल-केवल महाराज, आपकी और हमारी आत्मा की ओर रहे। *स्वलक्षी और स्वरूपलक्षी बन कर जियें, ऐसा बल, बुद्धि, शक्ति हम सब भुल्काओं को देना। हमें आपके दर्शन पहले की तरह हों, आप स्वतंत्रता से चल पाओ। आपका बढ़िया-सा प्यार तो अभी भी हमें मिल ही रहा है। पर, दूर से किसी को आता हुआ देख कर आप हँसते हुए मुखारविंद से कैसे कहते थे—देखो वो आ रहा है, उसके लिए इतनी व्यवस्था कर दो... ऐसा दर्शन हमें सदा हुआ करे, ऐसा आपके स्वास्थ्य का दर्शन हम सबको हो ऐसी कृपा बरसाना, ऐसी आपके श्री चरणों में प्रार्थना।*

अंत में सबकी ओर से अभिनंदन करते हुए **पू. जोधा भइया** (ललित शर्माजी) ने **प.पू. गुरुजी** को तथा **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** ने **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** को पुष्प हार अर्पण किया। विसर्जन प्रार्थना से समापन करके सबने प्रसाद लिया। देर रात्रि को चिदाकाश हॉल में प.पू. गुरुजी एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने कई पुराने संस्मरणों द्वारा आनंद किया।

21 नवंबर की सुबह भी करीब 11:00 बजे चिदाकाश हॉल में सेवकों ने करीब एक घंटा **प.पू. गुरुजी एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी से दादर मंदिर, सोखड़ा, सांकरदा एवं दिल्ली आगमन के आरंभ के दिनों के संदर्भ में प्रश्नोत्तर किए।** अंत में **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वामीजी** ने संतों-मुक्तों को प.पू. गुरुजी को राज़ी करने की करामत बताते हुए निम्न आशीर्वाद दिया—

बड़े पुरुष के समक्ष हम कोई भी बात करने आएँ, तब हमारे मन, बुद्धि और जिह्वा (जीभ) पर केवल 'हाँ' होनी चाहिए-जी, जी, जी, जी... उनको हमसे और कुछ चाहिए ही नहीं। वे जो कहें वो करोगे, तो वे सौ प्रतिशत राज़ी होंगे। *स्वाभाविक है वे कोई असंभव वस्तु कहें तो 'न' कह सकते हैं। भगतजी का गिरनार अलग था और हमारा गिरनार अलग हो सकता है। हरेक का गिरनार अलग होता है। जितने भक्त, उतने गिरनार होते हैं। पर,* ***सरल रास्ता यह है कि बड़े पुरुष काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के जीवन की ओर देखेंगे तो ख्याल पड़ेगा कि बापा के पास 'हाँ' के सिवा वे कुछ बोले ही नहीं।*** *कोई भी बात हो, उसके लिए उन्होंने 'हाँ' ही कहा।* ***सरलता से अधिक अन्य कोई गुण नहीं है। सरलता होगी तभी आध्यात्मिकता में आगे जा पाएँगे; वर्ना नहीं जा सकेंगे,*** *ऐसा मेरा मानना है। बड़े पुरुष जो भी पूछें, तो 'हाँ' ही कहना। मानो बुद्धि में न बैठे या असत्य लगता हो, फिर भी उससे क्या लेना-देना वो ही सब जानें। हमें 'हाँ' कहने में क्या जाता है? सूर्य के प्रकाश में बैठे हों और कहें कि सूर्य उगा नहीं, तो*

कहना— 'हाँ'! साधकों के लिए इसके सिवा और कोई रास्ता ही नहीं है। ***सरलता के सिवा कोई रास्ता नहीं है, कोई तर्क होना ही नहीं चाहिए। काकाजी कहते थे— Unconditional surrender. बापा छः किताबें पढ़े हुए थे, लौकिक दृष्टि से देखें तो पाँच प्रतिशत भी वे कोई चमत्कार करने योग्य न कहे जाएँ, लेकिन इतिहास बताता है कि भले कैसे ही प्रसंग बने होंगे, पर काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी जैसे अतिशय बुद्धिशाली उनके समक्ष दो हाथ जोड़ कर ही वर्ते हैं। ऐसा वर्तेंगे तो कहना नहीं पड़ेगा कि गुरुजी राज़ी रहना, वे सहज ही राज़ी होंगे।***

कई बार हम 'हाँ' तो कर देते हैं, लेकिन मन से नहीं कहते, इसीलिए उपाय बताया न कि मन, बुद्धि और जीभ तीनों से कहना चाहिए। मानो 'हाँ' कह दिया और मन में विचार उठते हैं तो इन्हें याद करके भजन का आधार लेना। इनकी मूर्ति पकड़ के स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण भजन करते हुए ***प्रार्थना करना कि हे महाराज, इनका वचन माना नहीं जाता, पर आप कृपा करो, बल दो... फिर हम मान पाएँगे, क्योंकि वे ही जीव से मनवा लेते हैं।*** *हमें इतनी ही सुरुचि रखनी है कि जब उनका वचन माना नहीं जाए, तो उनका स्मरण करना है। पहले तो 'हाँ' ही कहना, फिर अगले दिन पूछें कि गुरुजी इसका ऐसा करें? यूँ पूछ सकते हैं, पर जब वे कुछ कह रहे हों, तब 'हाँ' के सिवा कुछ नहीं कहना चाहिए,* ***कोई argument नहीं होना चाहिए।*** *फिर वे ही हमें कहेंगे कि ऐसा नहीं ऐसा करें या फिर दो दिन बाद कहें कि गुरुजी आपने ऐसा करने के लिए कहा था, पर ऐसा करें तो? पर यह चीज़ गलत है ऐसा नहीं कह सकते।* ***वे जो कहते हैं वो परम सत्य है।*** *यह बात पकड़ कर उनके पास वर्तेंगे, तो सारी जिम्मेदारी उनकी होगी, हमारी नहीं और हमारी तो कोई जिम्मेदारी है ही नहीं, जो कुछ है वो उनकी ही है। लेकिन, वे राज़ी हो जाएँगे।* ***बड़े पुरुष को राज़ी करने का उपाय ही यह है कि उनके पास तनिक भी मन-बुद्धि नहीं लगाना।*** *वे कहें कि इस गधे की पूजा करना, तो उसकी पूजा करना। हमें क्या फर्क़ पड़ जाता है?* ***हमें तो उनके वचनानुसार जीना है। इस कक्षा का दृढ़ विश्वास इनके चरणों में अर्पित करें। वे ही सब कुछ करने वाले हैं।*** *स्वामीजी कहते थे कि सौ प्रतिशत में से एक प्रतिशत में हमें 'हाँ' करनी है, बाकी 99 प्रतिशत सत्पुरुष करते हैं।*

ऐसी आध्यात्मिक खुराक देने के उपरांत दोपहर को प्रसाद लेकर उन्होंने बिजवासन - स्वामिनारायण फार्म के लिए प्रस्थान किया। 22 नवंबर की सुबह वहीं से Airport जाकर flight से गुजरात लौटे। एक दिन के अंतराल पर **24 नवंबर** की रात को **गुरुहरि पप्पाजी महाराज स्वरूप प.पू. हंसा दीदी** व गुणातीत ज्योत की बहनों का प्रतिनिधित्व करते हुए गुणातीत प्रकाश के

ज्येष्ठ **पू. विरेनभाई** और गुरुहरि पप्पाजी महाराज के मानसपुत्र **पू. दिलीपभाई भोजाणी** दिल्ली मंदिर पधारे। **सत्पुरुष के प्रति भक्ति अदा करने की सीख देते हुए, प.पू. हंसा दीदी ने प.पू. गुरुजी की आयु व स्वास्थ्य को ध्यान में रख कर, निष्ठा और शुद्धता के प्रतीक श्वेत रंग का बहुत ही हल्का हार व प्रार्थना का कार्ड भिजवाया था**, जिस पर लिखा था—

परम पूज्य गुरुजीस्वरूप आंनदी दीदी

जय स्वामिनारायण!

*गुणातीत ज्योत परिवार की ओर से एक सफ़ेद सुंदर **हल्का** हार हमारे गुरुजी के लिए भेज रहे हैं। तो वे हार ग्रहण करें और आशीर्वाद दें। उनका स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहे, ऐसी गुरुहरि पप्पाजी, काकाजी और बा से अंतकरण की प्रार्थना-स्वामिनारायण भगवान से प्रार्थना।*

यही हंसा दीदी के जय स्वामिनारायण!

दि. 24.11.25, सोमवार

पू. विरेनभाई और पू. दिलीपभाई ने चिदाकाश हॉल में विराजमान प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। साथ ही **प.पू. हंसा दीदी** द्वारा भेजा **विशिष्ट प्रसाद** भी दिया, जिसे देख कर **प.पू. गुरुजी** सहज ही बोले— ***तमे तो बहु बधु लई आव्या...*** तत्पश्चात् इन्होंने प्रसाद लिया। **25 नवंबर** की सुबह प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा का दर्शन किया और प्रसाद लेकर दोपहर की flight से गुजरात गए। कुछ घंटों के लिए दिल्ली मंदिर आए पू. विरेनभाई और पू. दिलीपभाई भोजाणी ने अधिकांश समय तो Airport पर आने-जाने में व्यतीत किया। पर, इस सेवा द्वारा उन्होंने **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** की जीवनभावना— ***'अक्षरधाम के दिव्य कुटुंब के सभी एक ही होकर संप, सुहृदभाव, एकता रखते हुए जिएँ'***—की स्मृति कराई।

29 नवंबर की रात के **10:00 बजे** सांकरदा मंदिर से **पू. नरनारायणस्वामीजी (पू. बापुस्वामी)** तथा **पू. स्नेहलस्वरूपस्वामीजी** तीन सेवकों के साथ आए। एक सप्ताह दिल्ली मंदिर में ठहरे। इस दौरान प.पू. गुरुजी की निश्रा में संतों-सेवकों के साथ बैठ कर प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम, उनके साधु होने के बाद संस्था और फिर सोखड़ा, सांकरदा व दिल्ली आने के पुराने संस्मरणों की मानो शिविर करके दिल्ली मंदिर के संतों-सेवकों को गुणातीत समाज के इतिहास व प.पू. गुरुजी के साथ गुज़रे सुनहरे पलों की झांकी करा कर 4 दिसंबर को सांकरदा जाने के लिए बाय रोड प्रस्थान किया। रास्ते में उदयपुर **अक्षरनिवासी पू. पुरी साहेब** के सुपुत्र **पू. आशिष-पू. प्रियंका पुरी** के घर रात्रि निवास करके उन्हें सेवा का लाभ देकर अगले दिन

सांकरदा पहुँचे। **यूँ गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों से पधारे स्वरूपों, वरिष्ठ संतों एवं प्रतिनिधियों ने एक अमिट छाप छोड़ी कि गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी द्वारा प्रदत्त ये 'योगी परिवार' किस प्रकार दिव्य प्रेम के अटूट धागों से बुना हुआ है!**

दिल्ली के बेला रोड पर स्थित **'स्वामिनारायण गादी'** मंदिर के वरिष्ठ संत **प.पू. धर्मनंदनस्वामीजी** को भी **पू. हरिवदनभाई दोशी** द्वारा जब प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य के विषय में पता चला, तो वे भी **8 दिसंबर** की सुबह संतों व सेवकों के साथ श्री ठाकुरजी के दर्शन एवं प.पू. गुरुजी से ख़ास मिलने आए। संभवतः **भगवान स्वामिनारायण** द्वारा स्थापित **'आत्मबुद्धि व प्रीति'** की दृढ़ता का दर्शन कराने हेतु प.पू. गुरुजी ने अस्वस्थता ग्रहण की हो।

लेकिन, दूसरी ओर जैसे कि **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** की प्रकरण 5 की 388वीं बात में लिखा है—

एक दिन स्वामी महापूजा में विराजमान थे कि वहीं अंतरवृत्ति (नाड़ी-प्राण) खींच कर समाधि में इतने लीन हो गए कि दो-तीन दिन तक जागे ही नहीं। फिर जब अपने आसन पर पालथी मार कर बैठे, तो सबको समाचार मिला कि स्वामी समाधि में से जाग गए हैं। तुरंत ही मंदिर के सभी भक्त वहाँ एकत्र होकर एक टक स्वामी को देखते रहे। यह देख कर स्वामी बोले—

जिस प्रकार अभी मुझे देख रहे हो, यदि ऐसी की ऐसी ही वृत्ति रहे, तो कर्मग्रंथि, संशयग्रंथि, ममत्वग्रंथि, इच्छाग्रंथि, अहंग्रंथि इत्यादि सभी ग्रंथियाँ पिघल जाएँ।

तो, अपने निजी समाज को अंतर से झकझोर कर जाग्रत करने के लिए **प.पू. गुरुजी** ने रोग धारण करके पुनः मौन संदेश दिया—

हम अपने मन की गाँठे छोड़ेंगे, तो महाराज प्रतीति कराएँगे और हम सुखी होंगे।

पर, अपनी ज़िद्द पकड़े रखेंगे तो जिंदगीभर दुःखी रहेंगे...

प्रसंगों का सिलसिला चलता ही रहेगा।

विभूति पुरुषों के जीवन का एक ही उद्यम है कि उनके संबंध वाले मुक्त **बाह्य दृष्टि** छोड़ कर, केवल और केवल प्रगट प्रभु की मूर्ति में लय व लीन होकर, प्रभु के बल से भजन का एकमात्र सहारा लेकर जीतेजी ब्रह्मानंद-अक्षरधाम के सुख से सुखी रहें तथा अन्यों को बाँटें!

हे महाराज, हे स्वामी, हे गुणातीत स्वरूपों... हम आपके नादान बालक हैं और आप करुणा का अथाह सागर हो; तो कृपा करके **हमारी आज तक की सभी त्रुटियों को माफ़ करके, पल-पल आपके ही बल से जीवन जीने का एक अवसर प्रदान करके, अविद्या और अज्ञानता के चक्रव्यूह से मुक्त करें और अपनी देह पर ग्रहण करे कष्ट को त्याग कर स्वस्थ व निरामय रहें, ऐसी अंतर से प्रार्थना!**

18 सितंबर 2025

गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति पर्व निमित्त धुन-भजन...

प्रगट प्रभु के साथ हमने जो जीवन बिताया है; इन्होंने हमें जो आनंद कराया, हमें उपदेश-परामर्श दिया, हमारे साथ जो चरित्र किया, वो सब स्मृतियाँ करें।
जिन्होंने गुणातीतभाव प्रगटाया हुआ हो और उस भाव में अखंड़ लीन रहते हों, ऐसे संत की स्मृति के साथ नाम रटन करना चाहिए, उसी consciousness में रहना चाहिए...
यदि बड़े संत को हमें कहना पड़े कि आप ये करो, तो उसका अर्थ हैं कि हमने उन्हें विवश-मोहताज़ किया। अपने आप उनकी मरज़ी पकड़ कर, हम उसके मुताबिक़ जीवन जियें... वो सच्ची consciousness-सरलता है।

- प.पू. गुरुजी

गुणातीत स्वरूपों के स्मृति पर्व निमित्त धुन-भजन...

गुरुहरि काकाजी महाराज यानि— **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज** के सच्चे दास-चहेते सुपात्र! गुरुहरि काकाजी महाराज के जीवन में जब से ब्रह्मस्वरूप योगी बापा आए, तब से वे सतत् उनका प्रकाश रूप ही वर्ते और उनके संबंध वालों की सेवा में ही जीवन की धन्यता-परमपद माना। दरअसल, **जीवों के हठ, मान, ईर्ष्या के रोगों को जड़ से मिटाने के लिए ही उनका धरती पर प्राकट्य था।** भले ही उन्होंने इस जगत से स्थूल रूप से स्वधामगमन किया, पर वे तो अजर-अमर, ऐसे सनातन सत्य स्वरूप हैं कि आज भी दिव्यता व अहोभाव से यदि हम उनके लीला-चरित्रों में लय और लीन रहेंगे, तो उनकी स्थूल कमी महसूस ही नहीं होगी, वरन् हमारे आसपास और भीतर में उनकी सुवास महकती प्रतीत होगी। इसी अनुभव के आधार पर ही तो पवई मंदिर के एक भजन की पंक्ति है—

तुम तो यहीं कहीं 'काका' मेरे आसपास हो; आते नहीं नज़र, पर मेरे साथ-साथ हो...

सच, ऐसे गुणातीत स्वरूपों ने अनहद् करूणा, प्रीति, लाड़-प्यार से हमारे चैतन्य की जो परवरिश की है, उसका ऋण तो हम कभी चुका ही नहीं सकते, लेकिन निरंतर उनका स्मरण और उनके वचन में विश्वास रख कर, उसके अनुसार जीवन जिएँगे, तो वही हमारी उनके प्रति सच्ची भक्ति-आराधना कही जाए। इसीलिए **अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी, अनादि महामुक्त कृष्णजी अदा एवं गुरुहरि काकाजी महाराज** के स्मृति दिन धुन-भजन करके महाप्रसाद पाने के लिए सभी **18 सितंबर** की दोपहर 12:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए।

प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा को **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने गुलाब की पंखुड़ियों से सुशोभित किया था। 'मीडियम डेंसिटी फाइबरबोर्ड'(MDF) से दिल के आकार की फ्रेम्स में गुरुहरि काकाजी महाराज की भिन्न-भिन्न चित्र प्रतिमा अंकित करके निम्न प्रार्थना लिखी थी—

हे स्नेहलसिंधु दयालु प्रभु, गुरुहरि साक्षात् गुणातीत विभु...
काका हे अमर रहो, हृदयाकाशे सदा रहो...

आधा घंटा धुन करने के पश्चात् **पू. ऋषभ नरुला** व **सेवक पू. विश्वास** ने गुजराती भजन— **'मारा देहभावने भुलाव...'** इतनी भावपूर्ण शैली में गाया कि उसे सुन कर सभी दिल से रो पड़े और भजन का एक-एक शब्द-पंक्ति भीतर से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित कर रहा था।

तत्पश्चात् ऑडियो के माध्यम से **गुरुहरि काकाजी महाराज की परावाणी** द्वारा जब आशीर्वाद प्राप्त करने लगे, तब **प.पू. गुरुजी** ने सब पर कृपा करके निम्न प्रकार मार्गदर्शन दिया—

*...**काकाजी ने बोलते-चलते शुकदेवजी की जो बात की, वो यह कि जिन्होंने कृष्ण प्रगटाये हों ऐसे शुकदेवजी भी मानव स्वरूप में आश्रितों के लिए प्रगट होने चाहिएँ।** वर्ना मंदिरों में कृष्ण की मूर्तियाँ तो हैं ही, पर उन्हें प्रत्यक्ष करने वाले प्रगट स्वरूप होने चाहिएँ और शुकदेवजी जैसे प्रगट संत के प्रति अखंड दिव्यभाव की भावना रहनी चाहिए।*

***'स्वरूपयोग'** करवाते हुए **काकाजी** सबसे प्रार्थना कराते-बुलवाते—*

- *हमारे इंद्रियों को शुद्ध-पवित्र बनाना। पवित्र यानी **भगवान और संत के सिवा किसी का भी प्रभाव हम पर न हो, वो सच्ची पवित्रता है।** नहाना-धोना, स्वच्छ कपड़े पहनना भी ज़रूरी है, लेकिन सच्ची पवित्रता यही है कि हमारे मन के ऊपर अन्य किसी का भी प्रभाव न पड़े...*
- *गहरा श्वास लेकर **अशुद्ध प्राण** बाहर निकालने की बात से उनका तात्पर्य यह था कि भीतर में खूब वासनाएँ भरी हुई है। तो, अंदर श्वास लेने के बाद उसे जब बाहर निकालते हैं, तो उसके साथ ये सब वासनाएँ बाहर निकलेंगी। इसलिए वो प्राण अशुद्ध बन जाता है।*
- *मेरे अंतःकरण को भी पवित्र बनाना। मन के साथ अंतःकरण जुड़ा हुआ होने के कारण वो वासना से वासित है, इसलिए महाराज से प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरा अंतःकरण भी शुद्ध और पवित्र रहे।*
- *जीव का भी मन के साथ संबंध है, इसलिए महाराज से प्रार्थना करना कि मेरे जीव को भी पवित्र बनाना। जीव के ऊपर जो भी प्रभाव पड़े हुए हों, उसे आप पकड़ लेना।*
- *प्रार्थना करना कि प्रभु मेरे जीव को आपके तेज से चमकता हुआ-बलवान-शक्तिशाली बनाना। फलस्वरूप आत्मरूप होकर परमात्मा के संग-प्रगट स्वरूप के साथ जुड़ जाएँगे।*
- *'प्राणोत्थान'—प्राणों का उत्थान यानी जीव को इतना प्रबल बना दें कि वो परमात्मा के अंदर लीन हो सके।*

*उसके लिए ज़रूरी है कि **प्रगट प्रभु के साथ हमने जो जीवन बिताया है; इन्होंने हमें जो आनंद कराया, हमें जो उपदेश-परामर्श दिया, हमारे साथ जो चरित्र किया, वो सब स्मृतियाँ करें। काकाजी कहते थे—स्मृति-consciousness में रहने का मतलब है कि चेतना के अंदर वो चिपकी हुई होनी चाहिए। जिन्होंने गुणातीतभाव प्रगटाया हुआ हो और उस भाव के अंदर लीन रहते हों, ऐसे संत की स्मृति के साथ नाम रटन करना चाहिए, उसी consciousness में रहना चाहिए... यदि बड़े संत को हमें कहना पड़े कि आप ये करो, तो उसका अर्थ यह है कि हमने उन्हें विवश-मोहताज़ किया। अपने आप उनकी मरज़ी पकड़ कर, हम उसके मुताबिक़ जीवन जियें वो सच्ची consciousness-सरलता है।***

ऐसा आशीर्दान प्राप्त करके सबने महाप्रसाद लिया। कई मुक्त व्यस्तता के कारण धुन में नहीं आ पाए, लेकिन महाप्रसाद लेने के लिए ख़ास आए। सालों से देखा है कि आज के दिन कई भक्त तो ऑफिस इत्यादि से आधे दिन की छुट्टी लेकर भी अत्यंत महिमा से प्रसाद लेने के लिए अवश्य आते हैं। इससे एहसास होता है कि गुरुहरि काकाजी ने किस कदर सबकी आत्मा को स्पर्श किया है और दिल कहता है—

काकाजी अब भी प्रगट ही हैं, रक्षा हमारी पल-पल करते हैं
जब भी पुकारा है वे दौड़े आए हैं, अनुभव है सबका यही
क्योंकि काकाजी के रूप प्रगट श्रीजी, उनके द्वारा रहे प्रगट श्रीजी!

13 सितंबर 2025 – प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य पर्व...

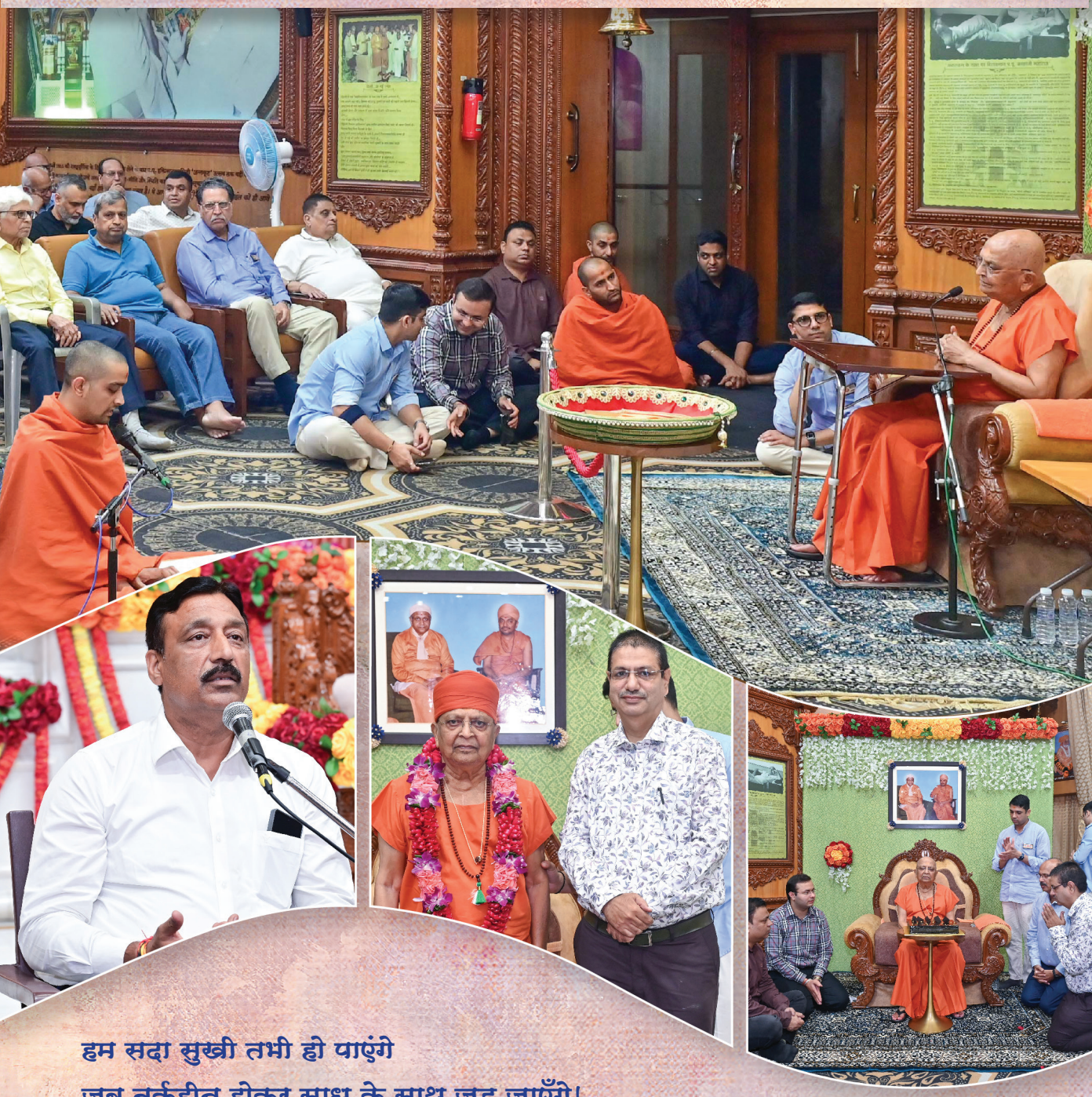

हम सदा सुखी तभी हो पाएंगे
जब तर्कहीन होकर साधु के साथ जुड़ जाएँगे।
उनके कार्य, उनके बोलने-चलने, उनकी कथावार्ता या ज्ञान में
हमें कोई शंका नहीं होगी, तभी हम सर्वथा-सर्वदा सुखी हो पाएंगे...

—प.पू. गुरुजी

13 सितंबर - प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य पर्व

उत्तर भारत के मुक्तों के लिए भारत की पावन धरा पर प.पू. गुरुजी का प्राकट्य होना और दिल्ली में निवास करके उन्हें प्रभु की मूर्ति के सुख से सुखी करना, मानो मानव जीवन सार्थक करने की लॉटरी की बड़ी टिकिट जीतने जैसा कहा जाए। इसलिए प.पू. गुरुजी के प्रति अपना कृतज्ञता भाव अर्पण करते हुए भक्तजन वर्षों से **13 सितंबर** को भी प.पू. गुरुजी का प्राकट्य पर्व मनाते हैं। इस बार भी 13 सितंबर की सांय 7:30 बजे **प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य दिन** मनाने के लिए स्थानिक मुक्त कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। भगवान स्वामिनारायण ने नीले रंग की सुंदर पोशाक एवं पाघ धारण की थी। लाल, नारंगी और पीले रंग के कृत्रिम पुष्पों के तोरणों से श्री ठाकुरजी के सिंहासन को सुसज्जित किया था। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे हरे रंग का कलात्मक बोर्ड लगाया था, जिस पर गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र की झांकी कराते हुए गुरुहरि काकाजी महाराज व प.पू. गुरुजी की एक साथ बैठे हुए चित्र प्रतिमा अंकित की थी।

परम आनंद की बात है कि प.पू. गुरुजी ने साधु दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् दादर मंदिर में जिनके सान्निध्य में रहते हुए प्रारंभिक साधना की, ऐसे **संत शिरोमणि प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज का प्राकट्य दिन भी 13 सितंबर है।** अतः सभी की ओर से उन्हें प्रणाम करते हुए, सर्वप्रथम **पू. ऋषभ नरूला** ने प्रार्थनारूपी भजन **'सोनाना महल अमे मांग्या महंतजी...'** प्रस्तुत किया। इस भजन का भावार्थ यही है कि प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज जैसे गुणातीत स्वरूपों ने हमें अपना अनमोल संबंध देकर, हमारे योग व क्षेम की ज़िम्मेदारी उठा की और हमारे हृदय को प्रभुरूपी धन-संपत्ति से युक्त करके हमें दोषों से मुक्त करने अविरत परिश्रम कर रहे हैं। तत्पश्चात् **पू. पंकज रियाज़जी** एवं **सेवक पू. विश्वास** ने प.पू. गुरुजी को नमन करते हुए **'काकाजी को साक्षात् प्रगटाया है...'** भजन प्रस्तुत किया।

भजन के उपरांत **पू. आनंदस्वरूपस्वामीजी** ने **'सहृदयी'** ग्रंथ के प्रकरण-8 **'सरलता'** में लिखित संत कबीरदासजी का प्रसंग पढ़ा और उसका निरूपण करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया—

हरिप्रसादस्वामीजी, *कबीरजी का एक प्रसंग अकसर बताते थे कि सालों पहले कबीरजी हरिद्वार की भूमि पर विचरण कर रहे थे। रास्ते में 21 साल की मृत युवा लड़की की दफ़न विधि चल रही थी। वहाँ उपस्थित मुस्लिमों को हुआ कि ये दफ़न क्रिया चल रही है, तो अंतिम विधि पर यदि कबीरजी अपने पवित्र हाथों से इसके शरीर पर पुष्प छाँट कर संकल्प-आशीर्वाद दें, तो ये*

लड़की की आत्मा बहिश्त-स्वर्ग में जाए। ऐसी भावना से वे लोग कबीरजी को कब्रिस्तान में ले आये।

वहाँ जाकर कबीरजी ने लड़की के शरीर से चद्दर हटवा कर निर्वस्त्र करने को कहा। फिर उन्होंने 2-3 बार उसके शरीर पर हाथ फिराया। लड़की का निर्वस्त्र शरीर देख कर और उसके ऊपर कबीरजी को हाथ फिराता देख कर, उनके साथ के संतों के मन में ग़लत विचार आया। फिर विधि संपन्न करने का कह कर कबीरजी तो अपने आश्रम की ओर चलने लगे और चलते-चलते रास्ते में बोलते जाते—

जहाँ जलाई सुंदरी मत जा वहाँ कबीर, उड़ती भभूति अंग लगे सूना करे शरीर।

फिर एक जगह वृक्ष की छांव में सब खड़े रहे। तब कबीरजी के संतों में से श्रेष्ठ साधु सदानंद पश्चाताप से रोने लगे कि मुझे कबीरजी के प्रति कितने ग़लत विचार आए कि उन्होंने निर्वस्त्र युवा लड़की पर हाथ फिरा कर मज़ा ले लिया। उसे कबीरजी के प्रति मनुष्यभाव आ गया। सदानंद ने कबीरजी से कहा कि आपके साथ रहकर-साधना करके ऐश्वर्य तो खूब आया है; पारमेश्वरी शक्ति भी प्राप्त की, लेकिन मेरा हृदय पवित्र नहीं है। उस लड़की पर आपने जो हाथ फिराया, उसे देख कर मुझे आपके प्रति मनुष्यभाव और मन में ग़लत विचार आ रहे हैं, वे कब टलेंगे? कबीरजी ने कहा—सबके मन में जो प्रश्न हैं, उसका उत्तर आश्रम में पहुँच कर कल सुबह दूँगा। संतों के साथ गोष्ठी करते-करते कबीरजी आश्रम में पहुँचे। सबको आतुरता थी कि कब सुबह हो और नहा-धो कर पूजा में कबीरजी के पास पहुँच जाएँ और फिर उनसे उत्तर जानें। सुबह की कथा पूरी होने के बाद सदानंद ने देखा कि कबीरजी तो कुछ बोले ही नहीं। फिर उसने पूछा—मैंने कल जो आपसे पूछा था, उसका क्या उत्तर है? कबीरजी ने कहा दोपहर के भोजन के बाद उत्तर दूँगा। सदानंद को ऐसा लगा कि उन्होंने बात टाल दी।

आश्रम में पंद्रह साल की एक निर्दोष लड़की मुन्नी रहती थी। उसे कबीरजी के प्रति जो निर्दोषभाव था, उसके कारण वो हर एक को निर्दोष लगती थी। *कहने का तात्पर्य यह कि* ***हमें ऐसे निर्दोषभाव से 'अक्षरधाम' के- 'ब्रह्म' के गुण प्राप्त करने हैं। ब्रह्मस्वरूप संत को निर्दोष मानेंगे, तो ये चीज़ें आसानी से सिद्ध हो जाएँगी। वो लड़की भले छोटी थी, लेकिन उसका दिल बहुत बड़ा था। कबीरजी के साथ उसका सर्वोपरि संबंध था। उनके प्रति उसे गुरु का भाव तो था ही, पर उसे दृढ़ विश्वास था कि ये मुझे साक्षात् प्रभु का आनंद कराते हैं और मुझे अपने स्वरूप की पहचान देने के लिए आए हैं। कबीरजी उसके जीवन प्राण थे, उनके मनन-चिंतन, दर्शन और भीतर में***

भी उन्हें धारे बिना वो रह नहीं सकती थी। *एक भजन की लाइन है कि एक भी ख़ाली पल जाए, तो दूसरी पल न आए—मतलब देहांत हो जाए। उसका दिल न छोटा था और न ख़ाली था, बल्कि प्रभु-कबीर की मूर्ति की स्मृतियों-मिठास से भरा हुआ था। मतलब उसके मन में कबीरजी की स्मृतियों की हरियाली थी।* ***सालों पहले कबीर की मुन्नी के इस प्रसंग की बात चलती थी, तब मैंने कहा था कि आनंदी ऐसी लड़की है।***

तो, दोपहर के बारह बजे भोजन के बाद कबीरजी ने एक चरित्र किया। हम सब जानते हैं कि दोपहर के बारह बजे सूर्य मध्याह्न पर होता है। सदानंद जो संत मंडल में बड़ा leader था, उसके साथ पूरा मंडल वहीं बैठा था। कबीरजी ने मुन्नी को बुला कर आज्ञा की—बेटा मुन्नी, लालटेन ले आओ मुझे पत्र लिखना है। सब विचार में पड़ गए कि दिन में लालटेन का क्या काम? फिर सोचा कि आश्रम में शायद नई लालटेन आई होगी, उसे कबीरजी दिखाना चाहते होंगे। पर, मुन्नी जो लालटेन लेकर लाई, वो तो जो मंदिर में थी वो ही थी, उसमें कोई नवीनता नहीं थी। पुस्तक में लेखक ने बहुत अच्छी तरह बताया है कि ***कबीरजी के चरित्र को दिव्यभाव से न निहार कर, मायिकभाव ही रखने वाले सेवकों को दिव्यभाव में की भूमिका में ले जाने के लिए उन्होंने ये चरित्र किया। जो वहाँ बैठे थे, उन्हें तो कबीरजी ने आज्ञा नहीं की, पर मुन्नी को की। जिसे कबीरजी के प्रति कभी कोई संशय ही नहीं था। दिमाग से बिना तर्क किए वो कबीर के साथ जुड़ी हुई थी, वो उसका निर्दोषभाव था। यह प्रसंग पढ़ना और समझना ही कठिन है। ऐसे चरित्र करके हमें अगर संत हमारी परीक्षा लें, तो हम सब fail हो जाएँ।*** *आख़िर मन में तो ऐसा बोलेंगे ही कि* ***आज तो कबीरजी ने लीला करी!*** *भीतर में उठी शंका को छुपाने-दबाने के लिए उसका नाम बदल कर बता देंगे कि मुझे शंका नहीं हुई, मैं तो समझता हूँ कबीरजी ने लीला करी। लेकिन,* ***कबीरजी जैसे संत सच्चे हैं और प्रसंगों द्वारा हमें कुछ समझाना चाहते हैं, वो समझे नहीं कि हमारे गुरु जो करते हैं, वही सही और सत्य है। ऐसे 'संबंध' को 'दिव्य संबंध' कहते हैं।***

तो, कबीरजी की आज्ञा से मुन्नी लालटेन लेने चली गई और दो मिनट में लालटेन लेकर लौटी। कबीरजी ने लालटेन के उजाले में पत्र लिखना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद बोले—ये लालटेन ज़रा मेरी pencil के क़रीब ले आ, ताकि उसकी रोशनी में मैं आराम से लिख पाऊँ। मुन्नी तो फट से लालटेन को और नज़दीक ले आई। वहाँ जो संत बैठे थे, उन्हें ख्याल नहीं पड़ा कि गुरु किसलिए ऐसा कर रहे हैं, क्या समझाना चाहते हैं? कबीरजी फिर बोले—लालटेन ऊपर कर,

बहुत नीचे रखने के कारण इस पर परछाईं पड़ती है, ऊपर करोगे तो हट जाएगी और मुझे ठीक से नज़र आएगा। मुन्नी ने लालटेन थोड़ी ऊपर की। वहाँ बैठे हुए सबको तर्क-वितर्क हुआ कि गुरु भी मूर्ख और चेली भी मूर्ख। भले बोले नहीं, पर मन में तो हुआ ही। जैसे ही सबके मन में ये विचार आया कि उसी पल कबीरजी बोले—बेटा मैंने पत्र लिख लिया, अब तू लालटेन वापस रख आ। कबीरजी ने ऐसा क्यों किया, वो किसी को ख्याल नहीं पड़ा कि ये क्या चरित्र किया? फिर सदानंद ने सबकी ओर से पूछा—आपने ये चरित्र किया पर मेरा प्रश्न तो अधूरा ही रहा, उसका क्या? कबीरजी बोल उठे—अभी ये जो हुआ, वो ही इसका उत्तर है। आप लोग मुझे अज्ञानी और अंधा समझते हो। मानो मैं स्वयं ज्ञान का स्वरूप हूँ, ऐसा नहीं समझते। मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। तब भी ये करता हूँ, इसके पीछे हार्द था। वो तो तुम समझे ही नहीं कि मेरे ऐसे चरित्र को दिव्य मानो और चलो दिव्य भी मान लो... पर नहीं, जो किया वो दिव्य है और वो ही सत्य है। ***ऐसे दोपहर के मध्याह्न के समय लालटेन मंगवा कर पत्र लिखना कोई साधारण क्रिया नहीं थी, ज़रूरी क्रिया थी और वो कबीरजी ने करी। ऐसा आपने माना नहीं, जो मानना चाहिए था। जबकि ये मुन्नी को मैं जो कहूँ वो बिना तर्क लगाए करती रहती है। उसके मन में कोई भी प्रश्न उठते ही नहीं कि ऐसे क्यों कहते हैं? वो मुझे पहचानती है, समझती है कि मैं प्रभु का स्वरूप हूँ, प्रभु मेरे द्वारा अखंड काम करते हैं। मुन्नी से आप लोग ज्ञान प्राप्त करो और उसको देखो कि हर प्रसंग पर किस तरह वो मेरे साथ जुड़ी रहती है। मतलब बिना कोई संशय वो मेरी हर क्रिया, आज्ञा, मर्जी, स्वभाव का स्वीकार कर लेती है। स्वीकार करती है इतना नहीं, She is enjoying my nature. ऐसा देखोगे तो स्वरूपलक्षी सरलता का ख्याल पड़ेगा। तर्कहीन होकर स्वरूप की हर क्रिया-आज्ञा का पालन करें, वो सच्ची सरलता है।*** *कोई संशय हो ही नहीं कि क्यों ऐसी आज्ञा करी? आज इतने साल के बाद मुझे भी अगर काकाजी ऐसी आज्ञा करें, तो शायद वो कर तो लूँ, लेकिन मन में तो होगा कि भई, काकाजी ने ये क्यों करवाया? जबकि मुन्नी को कोई doubt नहीं था।* ***स्वामीजी ने 'सहृदयी' किताब में ये बहुत गहराई की बात करी है। हम सदा सुखी तभी हो पाएंगे, जब तर्कहीन होकर साधु के साथ ऐसे जुड़ जाएँगे। उनके कार्य, उनके बोलने-चलने, उनकी कथावार्ता या ज्ञान में हमें कोई शंका होगी नहीं, तभी हम सर्वथा-सर्वदा सुखी हो पाएंगे। स्वामीजी समझाते हैं कि हमारी मानीनता यानी जड़ प्रकृति को बदलने की कोशिश करेंगे, तो हम सरलता से झुक-मुड़ जाएँगे। हमारी दृढ़ हुई किसी समझ, जिसे हमने asset समझा हुआ***

है उसे छुड़वाने की कोशिश करेंगे, तब ऐसे संत के प्रति तनिक भी मनुष्यभाव तो नहीं आता, लेकिन मायिकभाव भी नहीं आएगा। मायिकभाव क्या? तो, भीतर में प्रश्न उठें कि ऐसा क्यों किया? जब मायिकभाव ही नहीं आएगा, तो अभाव

आने की तो बात ही दूर रहती है। जहाँ दिव्यता का अस्खलित प्रवाह ही बहता हो, वहाँ अभाव की तो कोई गुंजाइश रहती ही नहीं। *सो, ख्याल रहे कि तर्क-वितर्क और संत के प्रति अरुचि न हो। संत के प्रति चिढ़ न आए कि (कबीरजी) ऐसे लालटेन मंगवा कर हमें परेशान कर रहे हैं। बल्कि यही सोचें कि जो करते हैं वो मेरे लिए, इस लड़की (मुन्नी) के लिए-आश्रम के लिए और हमारे सबके लिए ज़रूरी होगा, यूँ मान कर उसे समझने की पूरी कोशिश करें।*

गुरुहरि काकाजी महाराज के समय से दिल्ली मंदिर से जुड़ीं अक्षरनिवासी **पू. निम्मी अरोड़ाजी** की छोटी बेटी **पू. तरुणा (शीनू)** व दामाद **पू. मनोज शर्माजी** कई सालों से सत्संग में आते हैं। परंतु मितभाषी पू. मनोज शर्माजी का संबंध प.पू. गुरुजी के साथ अधिकांशतः **'जय स्वामिनारायण'** करने के बाद—

प.पू. गुरुजी का पूछना—*कैसे हो?*

पू. मनोजजी का उत्तर देना—*ठीक हैं।*

और फिर... **प.पू. गुरुजी** का उनसे कहना—*'चाय-नाश्ता करके जाना...'*

यहाँ तक ही सीमित है। लेकिन, पहली बार सभा में माहात्म्यगान करते हुए पू. मनोजजी ने अपने दिल में संजोई प.पू. गुरुजी की स्मृतियों का वर्णन करते हुए जब प्रार्थना की, तब भजन की निम्न पंक्तियों की गहराई का ख्याल पड़ा—

संबंध में इनके आता है जो, प्रतीति प्रभु की होती है उसको
कृष्ण रूप किसी को, तो विष्णु रूप किसी को
जैसा जिसका भाव दिखे वैसा उसको, काकाजी रूप दिखने वाले
हमको मिले जो गुरुजी निराले...

आज **पू. भरत पंचालजी** का भी golden jubilee जन्मदिन था, सो पू. मनोजजी के वक्तव्य के बाद सभी की ओर से उन्होंने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद लिया। तभी प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का यह हार स्वयं उन्हें पहना कर एक स्मृति भेंट भी दी। आज **पू. राजूभाई शाह** व **पू. चिराग मोंडे** का भी जन्मदिन था, सो प.पू. गुरुजी ने उन्हें भी स्मृति भेंट दी। सभा के अंत में **केक** अर्पण हुआ और आज के मंगलकारी दिन का प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

व्रतोत्सव सूची

1. दि.15.12.'25, सोमवार – एकादशी, व्रत
2. दि.16.12.'25, मंगलवार– धनुर्मास प्रारंभ
3. दि.31.12.'25, बुधवार – एकादशी, व्रत
4. **दि.31.1.'25, बुधवार – एकादशी, व्रत**
   (मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में
   रात्रि 10:00 बजे से मध्यरात्रि महापूजा)
4. **दि. 3.1.'26, शनिवार – पौषी पूर्णिमा**
   मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की दीक्षा तिथि
5. **दि.13.1.'26, मंगलवार – लोहड़ी**
   प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य दिन
6. **दि.14.1.'26, बुधवार – मकर संक्रांति-भिक्षादान पर्व, धनुर्मास समाप्त**
   एकादशी, व्रत
   ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज स्वधामगमन तिथि
7. **दि.23.1.'26, शुक्रवार – बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती**
   सद्. निष्कुळानंदस्वामीजी, सद्. ब्रह्मानंदस्वामीजी
   एवं गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती
8. **दि.26.1.'26, सोमवार – प्रजासत्ताक दिन**
   अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामीजी की प्राकट्य तिथि
9. दि.29.1.'26, गुरुवार – एकादशी, व्रत
10. **दि. 3.2.'26, मंगलवार – गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 74वीं वर्षगाँठ**
    दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव
11. **दि.15.2.'26, रविवार – महाशिवरात्रि, व्रत**
    ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी का प्राकट्य दिन
12. **दि.18.2.'26, बुधवार – प.पू. गुरुजी की 89वीं प्राकट्य तिथि**
13. दि.27.2.'26, शुक्रवार – एकादशी, व्रत

स्वर्गों से शानदार है ताड़देव आपका
करता है अक्षरमुक्त ही दीदार आपका...